किलोल

वर्ष 4 अंक 3, मार्च, 2020

आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

मूल्य 80/-

संपादक - डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम. सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव,

बलदाऊ राम साहू, द्रोण साहू,

धारा यादव, डॉ. रचना अजमेरा,

डॉ. माया नायर, ताराचंद जायसवाल

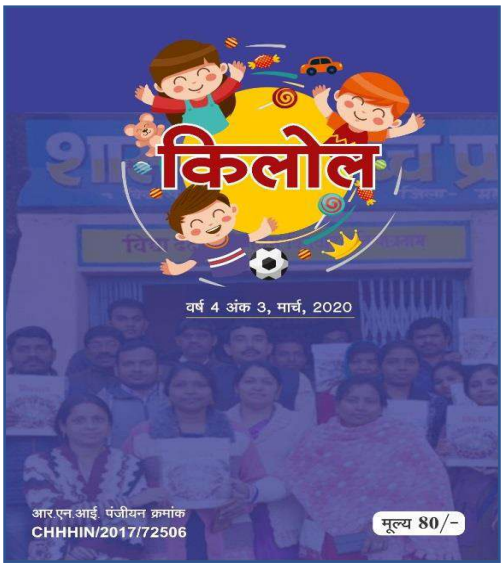

प्यारे बच्चों,

किलोल का मुद्रित दूसरा अंक आपके लिए तैयार है. हमें बहुत खुशी है कि आपमें से बहुत से लोग किलोल पत्रिका को अपनी कक्षा में मुस्कान पुस्तकालय में पढ़ते हैं और इसमें दी गयी विभिन्न गतिविधियों को अपने साथियों के साथ करते हुए सीखते हैं और मजे भी लेते हैं.

आपके व्दारा लिखी गयी गीत,कविता, कहानियों एवं अनुभवों को हम मुद्रित अथवा आनलाइन स्वरूप में इस पत्रिका में स्थान देने का प्रयास करेंगे. आप अपने शिक्षक के माध्यम से अपनी रचनाएं kilolmagazine@gmail.com में टेलीग्राम में kilol subscribers club Chhattisgarh में जुड़कर या फिर व्हात्सेप्प में 9406347036 में भेज सकते हैं. हमें आपकी रचनाओं का इंतजार रहेगा.

आपका

आलोक शुक्ला

अनुक्रणिका

भारत को स्वच्छ बनाना है 6

मैं नदी हूं 8

बसेरा 10

नन्ही सी कली हूँ 11

जाड़े की मिठाई 13

मेरी साइकिल 15

सोच रहा हूँ 16

प्यारे बच्चे 17

तोता 19

Manu And Fox 20

प्यारा बसंत 21

मेरी किताब 22

कुंडलियाँ 23

क्रीड़ा (खेल) 23

..... 23

ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनो 24

आया बसंत ऋतुराज 25

ज्ञान की पाती (छत्तीसगढ़ ज्ञान) 27

माता - पिता के चरणों में वंदन शत्- शत् बार 29

रामकली स्कूल चली 30

चिडिया का सन्देश 32

सुनो पेड़ जी 33

सुन्दर गाँव 35

पहेलियाँ 36

फसल एवं पेड़ पौधों के नाम खोजिए 37

अमरबेल 38

पानी 39

प्रेरक कविता 40

बाल बचत बैंक 42

आह्वान 43
भाव जगाती है 45
मैं बहुत खुश हूँ 46
हर पल खुशी मनाता चल 48
हिंदी प्रशिक्षण को समर्पित 49
कलश पादप 50
किचन गार्डन एक, फायदे अनेक 51
छत्तीसगढ़िया लईका 53
माथे को कुछ सहला दे माँ 54
Ray of Hope 57
परिवार 59
किताबें 61
मेरा सरकारी स्कूल 62
पर्यावरण संबधी पहल 63
महासिवरातरी अउ हर हर महादेव 64
परीक्षा 66
बस्तर की अनोखी छटा 68
पक्का बंगाला 70
फागुन तिहार 71
Dream Big 73
आइये पत्तल की परंपरा को पुनर्जीवित करें 74
आपकी लिखावट आपके बारे में क्या बताती हैं 76
अधूरी कहानी पूरी करो 80
मित्रता 80
डिजेन्द्र कुर्रे जी द्वारा पूरी की गई कहानी 81
कन्हैया साहू (कान्हा) जी द्वारा पूरी की गई कहानी 82
संतोष कौशिक जी द्वारा पूरी की गई कहानी 83
चन्दन कुमार बारीक (कक्षा आठवीं, शासकीय उच्च प्रा.शा.लांती) द्वारा पूरी की गई कहानी 85
लक्ष्मी सोनी जी व्दारा पूरी की गई कहानी 87
सुशील राठौर जी द्वारा पूरी की गई कहानी 88

सुचि श्रीवास, कक्षा नवमी के द्वारा पूरी की गई कहानी 89
टेकराम ध्रुव दिनेश जी द्वारा पूरी की गई कहानी 90
सोना की होशियारी 92
अंतर ढूँढो 94
शिवरात्रि मनाबो --- महादेव में पानी चढाबो 95
मेरा परिवार 97
चल संगवारी स्कूल जाबो 99
मातृभाषा के संरक्षण का दिन 100
रास्ता ढूँढो 104
चित्र देखकर कहानी लिखो 105
मतदाता दिवस 106
जिम्मेदारी 109
अन्तराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 111
थोडा हंस लो जी 113
भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली) 114

भारत को स्वच्छ बनाना है

रचनाकार - मनोज कुमार पाटनवार

आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
शौच के बाद एवं भोजन से पहले
साबुन से हाथ धुलाना है
आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है

खुले में शौच नहीं करना है
एक दूसरे को शपथ दिलाना है
आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है

घर पर रहे या स्कूल में रहे

शौच के लिए शौचालय में जाना है
आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है

कूड़े कचरा को नहीं फैलाना है
हर जगह डस्टबिन को अपनाना है
आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है

नदी तालाब को स्वच्छ बनाना है
वाहित मल को नदी में नहीं बहाना है
आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है

प्लास्टिक मुक्त देश बनाना है
कपड़े, कागज के थैला अपनाना है
आओ स्वच्छता को अपनाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है

मैं नदी हूं

रचनाकार - वसुन्धरा कुर्रे

नदी हूं मैं नदी हूं
हरदम बहती रहती हूं
सुनो बात मेरी अनोखी नदी हूं
पहाड़ों से जन्म लिया
जा सागर में मिल जाती हूं
नदी हूं मैं नदी हूं
हरदम बहती रहती हूं
जहां जन्म लिया कभी न मुड़कर देखा
सृष्टि की ग़ज़ब कहानी हूं
न जाने कैसे राहों में भी
रेत-कंकरीले,चट्टानों से भी
टकराती बह जाती हूं
नदी हूं मैं नदी हूं
हरदम बहती रहती हूं
कई नामों से पुकारा मुझे

ना जाने कितने नाम है मेरे
कहीं गंगा, कहीं यमुना
कृष्णा, कावेरी, गोदावरी और सरस्वती
ना जाने कितने नाम है मेरे
कल -कल करती, झर- झर करती
चट्टानों से खेला करती
हरदम बहती रहती हूं
नदी हूं मैं नदी हूं
हरदम बहती रहती हूं
मुझसे ही तृप्त हुई यह धरती
हरी-भरी मेरे जल से हो जाती है
मुझसे ही कितने कल-कारखाने
अपना उत्पादन बढ़ाते हैं
हर जीव-जंतु ने मुझसे ही जीवन पाया
नदी हूं मैं नदी हूं
हरदम बहती रहती हूं
मुझसे ही प्यासों ने पानी पाया
पानी से ही सब जीते हैं
न जाने कब से पानी है, तब से यह नदी है
यह नदी की कितनी बड़ी कहानी है
नदी हूं मैं नदी हूं
हरदम बहती रहती हूं

बसेरा

रचनाकार - प्रिया देवांगन "प्रियू"

देखो माँ मैंने आज अपना बसेरा बनाया,
तिनका- तिनका जोड़कर अपना घर बनाया.
कभी भूखे न रहने देती खाना रोज लाती थी,
तुम नहीं खाती थी माँ हमें रोज खिलाती थी.
ठंडी, गर्मी, बरसात इन सबसे हमें बचाती थी,
कितनी मेहनत करती थी माँ अब समझ में आया,
देखो माँ मैने आज अपना बसेरा बनाया.
बरसातों में पेड़ो पर छाया तुम लाती थी,
जाड़े के दिनों में हमें ठंड लगने से बचाती थी.
छोटे- छोटे बच्चे थे माँ उड़ना हमें सिखाती थी,
कैसे जीना हमें चाहिए राह नया दिखाती थी.
देखो माँ मैने आज अपना बसेरा बनाया,
कितनी मेहनत करती थी माँ अब समझ में आया.

नन्ही सी कली हूँ

रचनाकार - तुलस राम चंद्राकर

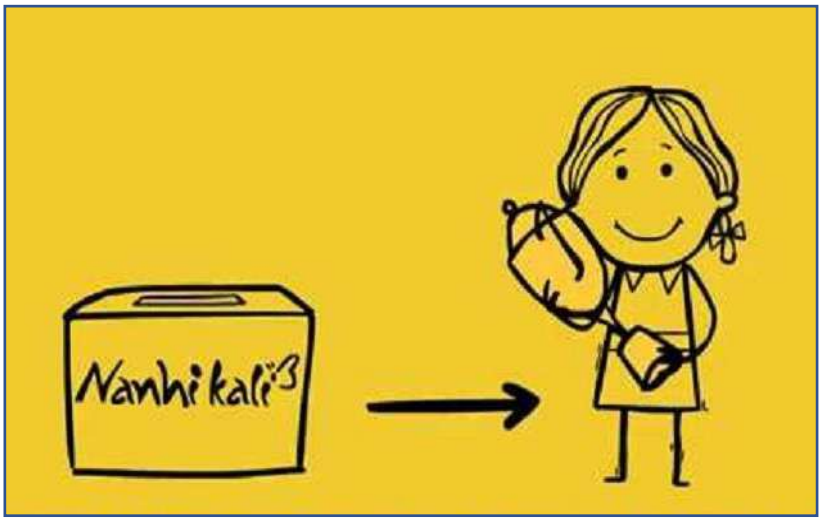

नन्ही सी कली हूँ, खिल जाने दो
गर्भ में माँ तेरी, आशाओं की बाँधी डोरी,
रग- रग में बहती, माँ ममता है तेरी.
तेरी ममता भरा मुखड़ा देखने की चाहत,
पूरी कर लेने दो .....

नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो
सूनी आँगन, सनसनाती ये गलियाँ,
मेरे इंतजार में ये फूलों की कलियाँ
चाहत भी इनकी, संग मेरे खेलने की,
आँगन में गौरया सी चहकने की चाहत,
पूरी करने दो .....

नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो ...
चाहत है पढ़ने की, चाहत है बढ़ने की,

अशिक्षा का ये अंधकार भगाने की,
समाज की बुराइयों से लड़ने की.
किरण सा प्रकाश फैलाने की चाहत,
पूरी कर लेने दो ....

नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो ...
नदियों से निरंतरता, आकाश सी ऊँचाई,
हवा सा बहाव, बादलों सी भलाई,
कल्पना सी उड़ान भरने की चाहत,
पूरी कर लेने दो ....

नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो ...
रह जाएगा यह संसार अधूरा बिन मेरे,
बेटी, बहन, पत्नी, माँ जैसे,जाने कितने रूप हैं मेरे
सरस्वती, लक्ष्मी, काली, दुर्गा आदि रूपों में पूजी जाती हूँ.
प्रतिभा सी प्रतिष्ठा पाने की चाहत,
पूरी कर लेने दो ....
नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो ...

जाड़े की मिठाई

रचनाकार - श्वेता तिवारी

जाड़े के दिनों में सुबह की गुनगुनी धूप का आनंद लेते हुए राजा, मंत्री और पंडित बैठे बातें कर रहे थे. राजा ने कहा "जाड़े का मौसम सबसे अच्छा मौसम है. खूब खाओ और सेहत बनाओ" यह बात सुनकर पंडित के मुंह में पानी आ गया. वह बोला महाराज जाड़ों में तो मेवा और मिठाई खाने का अपना ही मजा है, अपना ही आनंद है.

"अच्छा बताओ जाड़े की सबसे अच्छी मिठाई कौन सी है?" राजा ने पूछा. पंडितजी ने बर्फी, लड्डू, काजू की बर्फी आदि कई मिठाईयां गिना दी. राजा ने सभी मिठाईयां मंगा कर पंडित को दी. पंडित से कहा जरा खाकर बताइए. "पंडित जी इनमें से सबसे अच्छी मिठाई कौन सी है?" पंडित को सभी मिठाइयां अच्छी लगती थी किस मिठाई को सबसे अच्छी कहता इसलिए वह बारी-बारी से सब मिठाईयां खाता गया और कहा कि सभी मिठाईयां बहुत अच्छी है.

राजा ने मंत्री से पूछा तो वह बोला महाराज एक ऐसी मिठाई है जो सबसे अच्छी है मगर वह यहाँ नहीं मिलेगी, आज रात को मेरे साथ चलें तो मैं वह बढ़िया मिठाई आपको भी दूंगा. ठीक है भाई, इसमें देर क्यों, चलते हैं. रात को राजा और पंडित जी मंत्री को साथ लेकर चल पड़े. चलते-चलते तीनों काफी दूर निकल गए एक जगह पर कुछ लोग अलाव के सामने बैठे आपस में बातें कर रहे थे. वे

तीनो वहीँ रुक गए पास ही कोल्हू चल रहा था. मंत्री वहां गया और पैसे देकर गरम गरम गुड ले लिया. गुड़ लेकर वह पंडित और राजा के पास आ गए. अंधेरे में राजा और पंडित को थोड़ा-थोड़ा गुड़ देकर बोले लीजिए खाइए जाड़े की असली मिठाई और मिठाई का मजा लीजिए.

राजा ने गरम-गरम गुड़ खाया तो उन्हें बड़ा स्वादिष्ट लगा. राजा ने पूछा कहां से आई तभी, मंत्री को एक कोने मे पड़ी पत्तियां दिखाई दी. अपनी जगह से उठा और कुछ पत्तियां इकट्ठा कर आग लगा दी. फिर मंत्री बोले ठंड में गरम गरम चीजें अच्छी लगती हैं इसलिए स्वादिष्ट हैं यह सुनकर राजा मुस्कुराए और पंडित जी चुप बैठे रहे.

मेरी साइकिल

रचनाकार - बलदाऊ राम साहू

मेरी साइकिल बड़ी निराली,
रंग - बिरंगी, नीली - काली.

चलती है वह सरपट, सर-सर,
मैं दौड़ाऊँ इसे सड़क पर.

इससे मेरी मीत पुरानी,
लगती है जानी पहचानी.

मुझको शाला ले जाएगी,
और समय पर पहुँचाएगी.

काँटों से मैं, इसे बचाता,
यह मुझको, मैं इसे घुमाता.

सोच रहा हूँ

रचनाकार - द्रोण साहू

सोच रहा हूँ अपने घर के बाहर,
ध्यान लगाकर पढ़-लिखकर,
खुद का एक चाँद बनाऊँगा.

उस चाँद तक कोई न पहुँचे,
इसीलिए उसके ठीक सामने,
खुद का एक बाँध बनाऊँगा.

जब साथी मुझे लगे चिढ़ाने,
अपने चाँद पर मैं बैठकर,
उनको खूब चिढ़ाऊँगा.

जब टीचर लगे मुझे डाँटने,
उनके स्कूल से भागकर,
अपने चाँद पर चढ़ जाऊँगा.

प्यारे बच्चे

रचनाकार - रचना सोनी

नन्हे-नन्हे प्यारे बच्चे,
मन के होते बड़े ही सच्चे.

ना कोई चिंता ना फिकर,
मिट्टी- से होते हैं कच्चे.

नन्हे-नन्हे फूल से बालक,
पहली बार जब लाते पालक.

बच्चे का रोना चिल्लाना,
कोलाहल स्कूल में मचाना.
नन्हे-नन्हे प्यारे बच्चे ....

जब नव प्रवेश का उत्सव आता,
बच्चों का चेहरा खिल जाता.

रोना-चिल्लाना भूल जाते स्कूल
नन्हे-नन्हे प्यारे बच्चे ....

तोता

रचनाकार - मो.तबरेज आलम

तोता हूँ मैं तोता,
हरे रंग का हूँ मैं होता.
चोंच होती मेरी लाल,
उस पर नुकीला कमाल.
अमरूद,मिर्ची मैं हूँ खाता,
आसमान में फिर उड़ जाता.
टें- टें करके गीत सुनाता,
सबके मन को मैं भाता.
लोग मुझे घरों में रखते,
पिंजरे में वे कैद करते.
पर पिंजरे का जीवन न भाता,
पिंजरे में अपना प्राण है जाता.
काश! लोग मेरी पीड़ा समझते,
पिंजरे में मुझे कैद न करते.

Manu And Fox

Poet:- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

Lying on the way,
There was a box.
Manu opened it,
And saw a fox.
They became friends,
Went to the tree.
And began to count,
One, two, three.
Four, five, six, seven
And eight nine ten.
They felt gladness then,
Became the great man.

प्यारा बसंत

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

नन्हें-मुन्नों का प्यारा बसंत.
दुलारा बसंत,न्यारा बसंत.

गुनगुनी धूप और शीतल छाँव,
देता है इन्हें, वो यारा बसंत.

स्वच्छ धरती और नीला अम्बर,
निर्मल,पावन,उजियारा बसंत.

रंग-बिरंगे कुसुम दल लिये,
ख़ुशबू भरा गलियारा बसंत.

सूरज की भीषण गर्मी छाती,
धरती से नौ-दो-ग्यारा बसंत.

मेरी किताब

रचनाकार - एन. देवी हंसलेखा

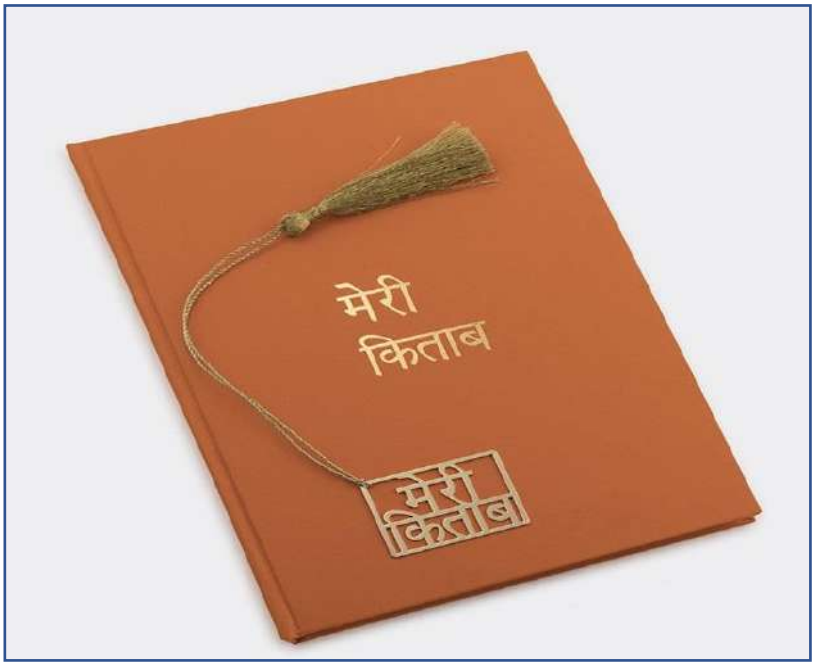

मेरी किताब बड़ी है प्यारी,
रंग-बिरंगी लगती है न्यारी.

पन्नों में है फूलों की क्यारी,
बातें इसकी बड़ी हैं निराली.

आओ मिल-जुल हम पढ़ें,
जीवन में हम आगे बढ़ें.

मेरी किताब बड़ी है प्यारी,
रंग-बिरंगी लगती है न्यारी.

कुंडलियाँ

रचनाकार - डीजेन्द्र क़ुर्रे “कोहिनूर”

क्रीड़ा (खेल)

क्रीड़ा में गुण हैं बहुत, सदा खेलिये संग
तनमन नित ही स्वस्थ हो, सुरभित हो हर अंग
सुरभित हो हर अंग, योग भी निशदिन करना.
प्रखर बनाकर लक्ष्य, हृदय में धीरज धरना
कह डिजेन्द्र करजोरि, उठाओगे जब बीड़ा
होगा तब ही भान, साधना है यह क्रीड़ा

ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनो

मानव का उपकार करो,
प्रेम-स्नेह से बात करो.
करो त्याग ईर्ष्या द्वेष का,
ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनो.
मन में लक्ष्य ऊँचा रखो,
कर्म पर ही विश्वास करो.
करो संकट का सामना,
ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनो.
दुखियों का दुख हरो,
रोगी की सेवा करो.
जीवन में पुण्य करके,
ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनो.
दूसरों का सम्मान करो,
भारत माता को प्रणाम करो.
आत्मविजेता बनकर जी,
ऐसा श्रेष्ठ इंसान बनो.

आया बसंत ऋतुराज

रचनाकार - टेकराम ध्रुव “दिनेश"

लेकर हरियाली धरा में,
आया बसंत ऋतुराज.
वन- उपवन में कलियाँ
मुकुलित हो गई.
शुभ्र- ज्योत्स्ना सविता की,
पुलकित हो गई.
वृंत- तरु के झूम रहे,
खुश होकर डार- डार.
खुमारी ले झूम रहा,
होकर समीर मतवार.
सरसों कुसुमीत हो गई,
खेतों में छाई बहार
गूँज रही उपवन में मधुमय,
भौरों की गुंजार
बौराए आम्रतरु,

पुलक उठी अमराई.
मनभावन मौसम पाकर,
कोयल ने कूक लगाई.
खिल उठा कमलदल,
और खिल उठा पलाश
लेकर हरियाली धरा में,
आया बसंत ऋतुराज.

ज्ञान की पाती (छत्तीसगढ़ ज्ञान)

रचनाकार - विजय लक्ष्मी राव

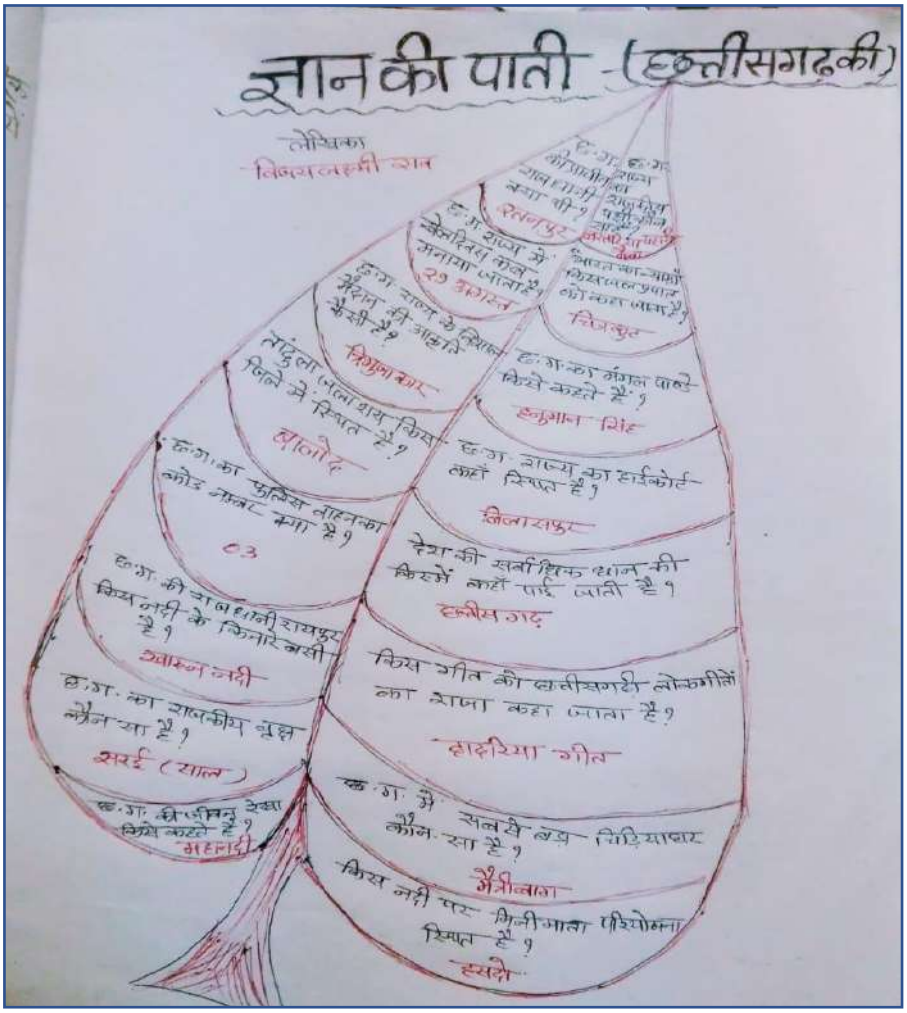

- छत्तीगढ़ की प्राचीन राजधानी क्या थी?:- **रतनपुर**
- छत्तीगढ़ का राजकीय पक्षी कोनसा है?:- **पहाड़ी मैना**
- छत्तीगढ़ राज्य का खेल दिवस कब मनाया जाता है? :- **29 अगस्त**
- "भारत का नयाग्रा" किस जलप्रपात किसे कहा जाता है? :- **चित्रकोट**
- छत्तीसगढ़ राज्य के विशाल मैदान की आकृति कैसी है? - **त्रिभुजाकार**
- छत्तीगढ़ का मंगल पांडे किसे कहा जाता है? :- **हनुमान सिंह**
- तांदुला जलाशय किस जिले में स्थित है? :- **बालोद**
- छत्तीगढ़ राज्य का हाई कोर्ट खा स्थित है? :- **बिलासपुर**
- छत्तीगढ़ की राजधानी किस नदी के किनारे स्थित है? :- **खारुन नदी**

- किस गीत को छत्तीसगढ़ी गीतों का राजा कहा जाता है ? :- **दादरिया गीत**
- छत्तीगढ़ का राजकीय वृक्ष कोनसा है ? :- **सरई(साल)**
- छत्तीगढ़ का सबसे बड़ा चिदिअघर कोनसा है? :- **मैत्रिबाग**
- छत्तीगढ़ की जीवन रेखा किसे कहा जाता है? :- **महानदी**
- किस नदी पर मिनीमाता परियोजना स्थित है? :- **हसदो**

माता - पिता के चरणों में वंदन शत्- शत् बार

रचनाकार - गिरजा शंकर अग्रवाल

माता -पिता के चरणों का वंदन करता है जो हर बार,
जीवन में मिलती खुशियाँ उसको है अपार.

सफलता का मूलमंत्र होता सदा उसके पास,
जो रहता नित चरणों में अपने माता- पिता के पास.

करते कठिन तपस्या हरदम हमारे सुखद जीवन की ले आस,
पर क्या हम हो पाते उनके? कसौटी पर हरदम पास.

स्वयं पीड़ा सहकर भी जो देते हमें प्रकाश,
आओ मिलकर सब मनायें "मातृ- पितृ पूजन दिवस" आज खास.

इतना काबिल बनाया मुझको रहूँगा मैं सदा कर्जदार,
ऐसे माता-पिता के चरणों में मेरा वंदन शत्- शत् बार.

रामकली स्कूल चली

रचनाकार - अनुराधा सिंह

छोटा सा है एक गांव जिसमें रहती है एक कली,
है तो वो नन्ही परी पर नाम उसका है रामकली.
आज रामकली लिये है मन में एक उमंग,
क्योंकि बड़ी बहन चन्द्रकली है उसके पास उसके संग.
साथ बहन के पीठ में लिये बस्ता रामकली निकल चली,
रामकली आज से स्कूल चली, स्कूल चली
रामकली देखती माँ को लगाते हमेशा अंगूठा,
पूछती अक्सर माँ से क्या उसके गांव स्कूल नहीं था.
माँ बेचारी हो जाती थी मूक बन निरुत्तर,
नहीं दे पाती थी इस कठिन प्रश्न का उत्तर.
नन्हें मन में घुमती रहती थी हमेशा एक,

स्वाभाविक सी उलझन और बाल-मन जिज्ञासा,
कब पूरी होगी उसकी, पढ़ने-लिखने की अभिलाषा.
हमेशा देखती गांव की दीवारों पर दो लाईनों का नारा.

बेटी पढ़ेगी, आगे बढेगी
बेटी पढ़ेगी विकास गढ़ेगी.

जिज्ञासा ने बाल-मन में लिया एक उबाल
तुरंत पूछा बड़ी बहन से उसने एक सवाल.
दीदी क्यों ऐसा है इन दीवारों का हाल,
चन्द्रकली बोली परी से क्यों घबराती बहना.
दीवारों में लिखी लाईनों में दिया है सुन्दर सपना,
हमारे गांव में भी है स्कूल जो सच करेगा यह सपना.
आज उसी सपने को सच करने चली,
गांव की परी रामकली, स्कूल चली स्कूल चली.

चिडिया का सन्देश

रचनाकार -धारा यादव

आंगन में एक चिडिया आई,
प्यारा एक संदेशा लाई.
देना थोडा दाना-पानी,
रोज कहूँगी नई कहानी.

फिर डाल पर झूलूँगी,
कभी आसमां को छू लुंगी.
चुन तिनका-तिनका लाऊंगी,
एक प्यारा नीड़ बनाउँगी.

कुछ गीत सुहाने गाऊँगी,
और सबका मन बहलाउंगी.
यदि प्रेम तुम्हारा पाऊँगी,
एक स्नेह बसंत दे जाउंगी.

सुनो पेड़ जी

रचनाकार - मेराज रजा

खड़े-खड़े हरदम रहते हो,
कुछ ना कहते, चुप रहते हो.
नीम, आम, जामुन, बहेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी.

कभी बैठकर हमसे बोलो,
दही-जलेबी खा खुश हो लो.
ललचाए से खड़े भेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी.

मिट्टी से तुम जल लेते हो,
मीठे-मीठे फल देते हो.
खाएँ बच्चे और अधेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी.

करो सुखी जीवन की राहें,
जो भी तुम्हें काटना चाहे.
हम उनको देंगे खदेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी.

सुन्दर गाँव

रचनाकार - बलदाऊ राम साहू

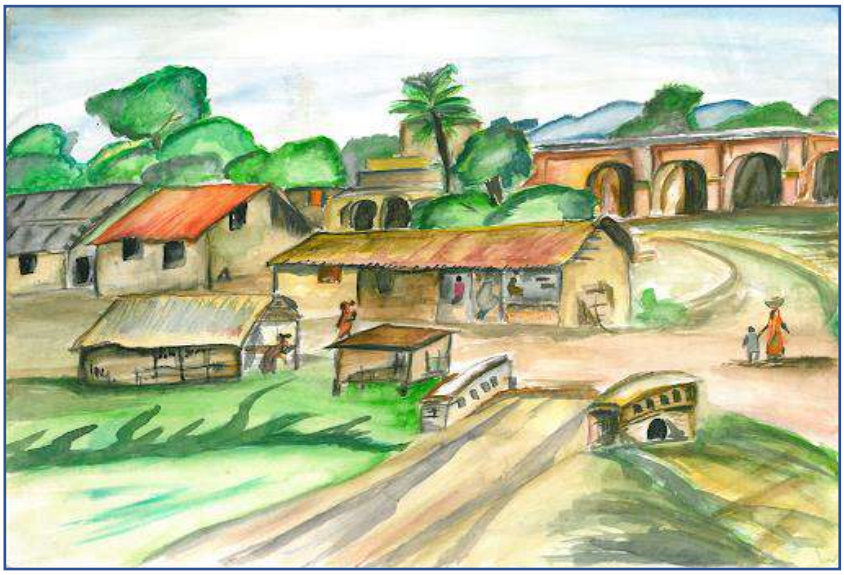

थके पथिक को देता है
पीपल शीतल छाँव
इसलिए प्यारा है अपना
छोटा सुन्दर गाँव.

बाग-बगीचे, नदी, ताल
पर्वत हैं मनोहर
बूढ़ा वट प्यार लुटाता
मनभावन हैं पोखर.

जलचर, नभचर, थलचर
सुख सभी पाते हैं
सुबह-सुबह पंछी गाकर
चित्त बहलाते हैं.

पहेलियाँ

रचनाकार - विजय लक्ष्मी राव

1. बीन बजाते आता हूं, खून पिए उड़ जाता हूँ.
2. टर- टर करते आता हूं, पानी में छिप जाता हूँ.
3. टिक- टिक करती रहती हूं, समय बताते फिरती हूँ.
4. फुर्र- फुर्र करती आती हूं, दाना चुग उड़ जाती हूँ.
5. लंबी गर्दन पीठ में फोड़ा, पतली टांगे रेत में दौड़ा.
6. रंग-बिरंगे पंख है मेरे, फ़ूल-फूल पर मंडराती हूँ.
7. रंग-बिरंगे पंखों वाला, घटा देख नृत्य करने वाला.

उत्तर खंड- 1. मच्छर, 2. मेंढक, 3. घड़ी, 4. चिड़िया, 5. ऊंट, 6. तितली, 7. मोर

फसल एवं पेड़ पौधों के नाम खोजिए

रचनाकार - दिलेश्वरी मरावी (कक्षा 5)

- तुम कई दिन तक विद्यालय नहीं आए
- सब लोग नाच नाच कर थक गए
- हम सूरदास के भजन गाते हैं
- एक अनार हर दिन खाया करो
- मीराबाई को हरि नाम का चाव लग गया
- एक दिन राधा नहर जा रही थी
- धोखेबाज रावण सीता को उठा ले गया
- चीनी और नमक पास में ही पडे थे
- ज्योति लकड़ी लेने वन में गई
- खेलने से पढ़ाई खराब नहीं होती
- चिड़िया उड़ दक्षिण की ओर
- चिड़िया वाली कहानी मजेदार है
- तुमको अपना विद्यालय कैसा लगता है
- जरा अपनी कॉपी पलट कर तो देखो
- सब बालक रंजन के साथ जाएंगे
- अतुल सीटी बजा रहा है
- साबुन से मलमल कर नहाओ
- बाजार से एक सीप ला सको तो अच्छा है
- फर्श की गोबर से लिपाई करो
- सीता जी रोज वाटिका में जाती थी

उत्तर खंड- 1.मकई, 2.चना, 3.मसूर, 4.रहर, 5.चावल, 6. धान, 7. बाजरा, 8.कपास, 9.तिल, 10.ईख, 11.उड़द, 12.नीम, 13.साल, 14.पीपल, 15.करंज, 16.तुलसी, 17.सेमल, 18.पलास, 19.बर, 20.जवा

अमरबेल

रचनाकार - पेश्वर राम यादव

चढ़ पड़ी अमरबेल पेड़ पर,
डालियों से यूँ लिपटने लगी.
स्वयं का उत्पाद होता नहीं,
पेड़ से रस यूँ ही पीने लगी.

पतली हाल पीली होती,
पेड़ को यूँ ही सुखाने लगी.
फल -फूल न पत्तियां होती,
जीवन भर यूँ ही बंध्या होने लगी.

क्लोरोफिल नहीं होने से,
दूसरों से पोषित होने लगी.
पोषक पौधे का शोषण करती,
अंत में स्वयं का शोषण होने लगी.

पानी

रचनाकार - द्रोण साहू

पानी ने कहा पानी से,
मिले थे हम कैसे,
चल पूछें मछली रानी से.

मछली ने कहा पानी से,
मिले थे तुम कैसे,
पूछो अपनी नानी से.

प्रेरक कविता

रचनाकार - संतोष कुमार कौशिक

पढ़ा-लिखा श्याम ईमानदार लड़का था.
रोजगार की तलाश में वह भटकता था..
श्याम काम की तलाश में शहर की ओर निकला.
सुबह से शाम हो गई लेकिन उसे काम नहीं मिला..
श्याम हार थक कर बैठा, मन में विचार आया.
आज का दिन गुजर गया काम करने का भाव आया..
श्याम झाड़ू उठाया, निःस्वार्थ भाव से दुकान के सामने किया सफाई.
दुकान के सेठ जी सफाई देखकर पूछा? यह कौन किया भाई..
दुकान के नौकर ने कहा- काम की तलाश में वह बैठा हुआ है.
बिना खाए पिए सुबह से काम पर लगा हुआ है..
सेठ जी ने श्याम को बुलाने संदेश भेजवाया.
उसे काम में रखकर ईमानदारी का पाठ पढ़ाया..
श्याम मन लगाकर सुबह से शाम तक काम किया.
सेठ जी को व्यापार में दुगना लाभ हुआ..
सेठ जी श्याम का पगार हर छः माह में बढ़ाता गया.
श्याम ईमानदारी से मन लगाकर कार्य करता गया..

श्याम का मान सम्मान व आय बढ़ने लगी.
ये बात साथी नौकर के हृदय में चुभने लगी..
श्याम को फंसाने साथी नौकर के मन में विचार जगा.
उनके घर छुपकर उनकी गतिविधि को देखने लगा..
साथी नौकर क्या देखा क्या पाया कुछ समझ ना आया.
दौड़े-दौड़े भाग कर सेठ जी को बात बताया..
सेठजी-सेठजी श्याम चोर है ईमानदारी का ढोंग दिखाता है.
दुकान के पैसे को चुराकर तिजोरी में रखता है..
वह तिजोरी को सुबह-शाम खोल कर देखता है.
नोटों की गड्डी होगा इसीलिए सुबह शाम पूजा करता है..
सेठ जी कुछ सोचा ना समझा नौकर के झांसा में आया.
श्याम के घर पहुंचकर तिजोरी को खुलवाया..
तिजोरी खोला उसमें एक फटी धोती व दो जूता निकला.
नौकर की आंख फटी रह गई,सेठ जी आश्चर्य से बोला..
श्याम यह क्या है इसी का पूजा सुबह शाम करता था.
श्याम कहा-यह फटी धोती व फटी जूता पहनकर शहर आया था..
लोग कहते हैं पैसा व पद आने पर अपनी औकात भूल जाते हैं.
यह फटी धोती फटी जूता मेरी औकात का याद दिलाते हैं..
सेठ जी आपका नमक खाया हूं ईमानदारी से काम करता हूं.
मुझ पर आपका विश्वास नहीं तो अभी घर जाता हूं..
अरे श्याम छुट्टी तुम्हारा नहीं, साथी नौकर का करता हूं.
जो मुझे अपनी जाल में फंसा, सोच अपनी ही नजर से गिरता हूं..
तुम जैसे ईमानदार नौकर आजकल मिलता कहां हैं.
मुनीम का पद देता हूं तुम्हारा दाना पानी लिखा यहां है..
सेठ जी को प्रणाम कर, श्याम अपने पद का फर्ज निभाया.
मुनीम का पद पर कार्य कर व्यापार को आगे बढ़ाया..

बाल बचत बैंक

प्रेषक - सुनील यादव

माध्यमिक शाला पेण्डरखी वि. खं. उदयपुर सरगुजा में पिछले साल 5 फरवरी 2019 को बाल बचत बैंक की स्थापना की गई थी जिसका उद्देश्य बच्चों में बचत की आदत का विकास करने के साथ-साथ बैंकिंग प्रक्रिया को समझना था. इस बाल बचत बैंक का संचालन स्वयं बच्चों के द्वारा किया जाता है. बच्चों के लिए बचत बैंक पासबुक, जमा पर्ची, आवक रजिस्टर, आदि का रखरखाव किया जाता है. पिछले एक वर्ष में बच्चों के द्वारा छोटी-छोटी राशी जमा और निकासी करके दस हजार रुपये की लेनदेन किया. प्रत्येक बच्चे के बचत खाते में सौ रुपए जमा होने के बाद, प्रोत्साहन स्वरूप 5 रुपये का ब्याज प्रभारी प्रधान पाठक सुनील यादव द्वारा दिया जाता हैं. वर्तमान में बाल बचत बैंक में लगभग चार हजार रुपये जमा हैं. आवश्यकता होती है तो बच्चे अपने बचत बैंक खाते से रपये निकाल लेते हैं जिसे उनकी पासबुक में दर्ज किया जाता है. इस प्रकार बच्चों में बचत की आदत का विकास होता है. और बैंकिंग प्रक्रिया को भी समझने का काम होता है.

आह्वान

रचनाकार - मनोज कुमार पाटनवार

चलो जी संगी, चलो जी साथी(शिक्षक),
सभ्य समाज बनाना है,
वक्त के साथ हमें चलना होगा,
हर घर शिक्षा पहुँचाना होगा,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
आलस्य से दूर रहो,
मंजिल तुम्हें बुलाती है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
शिक्षा के उजियारे से,
पिछड़े समाज को उठाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
सुंदर भाग्य हमारे हैं,
जो शिक्षक बनकर आए हैं,

चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
ज्ञान की गंगा सागर से,
समाज में अलख जगाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
दया प्रेम समभाव से,
ऊँच-नीच के भेदभाव को,
जड़ से हमको मिटाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
नशा धूम्रपान को बंद करा कर,
स्वस्थ समाज बनाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
बेटियों को शिक्षा दिलाकर,
नारी शक्ति को जगाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
पॉलीथिन से मुक्त कराकर,
स्वच्छ गाँव बनाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.
कर्तव्य पथ पर डटे रहकर,
प्रतिभाओं को जगाना है,
चलो जी संगी चलो जी साथी,
सभ्य समाज बनाना है.

भाव जगाती है

रचनाकार - बलदाऊ राम साहू

जीवन का गुणा-भाग दादी समझाती हैं
गीत, कविता और कथाएँ हमें सुनाती हैं.

हमें सुलाने के लिए वह लोरी गाती हैं
सूरज के आने से पहले हमें जगाती हैं.

होती है बड़ी मनोहर उनकी बोली भाषा
ऊँच-नीच का भेद सदा वह बतलाती हैं.

अकूत ज्ञान का भण्डार है उनके भीतर
जीवन का सार तत्व हमें लिखती हैं.

राष्ट्र धर्म ही सबसे ऊँचा कहती हैं दादी
दया, प्रेम, मानवता का भाव जगाती है.

मैं बहुत खुश हूँ

प्रेषक - सोनी केवट

छात्रा का नाम - सोनी केवट

कक्षा - सातवीं

गाँव - सलिहा, तहसील - बिलाईगढ़, बलोदा बाज़ार

संस्था का नाम - कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय बिलाईगढ़, बलोदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय बिलाईगढ़ में कक्षा सातवीं में पढ़ने वाली बालिका सोनी केवट, जिनका कहना है कि “भेदभाव रहित समाज ही सबको आगे बढ़ने में मदद करेगा” सोनी का कहना है कि पहले उसे पता नहीं था कि अगर कोई बात हमें अच्छी नहीं लग रही है तो उसे कैसे कहा जाये, इसी पर सोनी ने कहा “ मेरी माँ पहले मेरे साथ बहुत भेदभाव पूर्वक व्यवहार करती थी. मेरे दोनों भाइयों को ज्यादा प्यार देती थी और मुझे कम. मेरे भाइयों के लिए नए नए कपड़े खरीदती थी और मेरे लिए बहुत ही कम और यह सब देखकर मुझे बहुत ही दुःख होता था और मैं बहुत रोती थी”.

जब सोनी अधीक्षिका द्वारा अगस्त माह में आयोजित कक्षा सातवीं के जीवन कौशल सत्र “लिंग भूमिकाएँ और रूढ़ीवाद” में शामिल हुयी और उसे इस बात की जानकारी हुयी कि जो उसके साथ घर पर परिवार वाले व्यवहार करते हैं, वो भी तो भेदभाव ही है और फिर सोनी ने सोचा कि मैं यह बात घर पर कहूँगी और जब छुट्टियों में वह अपने घर गयी तो उसने अपनी मम्मी पापा को समझाया कि हमारे स्कूल में जीवन कौशल की शिक्षा दी जाती है, जिसमें बताया जाता है कि माता पिता को अपने बच्चों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिए, तो आप लोग भी मेरे साथ इस तरह का भेदभाव पूर्वक व्यवहार मत किया कीजिये, इस तरह से मेरे मम्मी पापा को भी अहसास हुआ कि वो मेरे साथ गलत कर रहे थे. अब मेरे मम्मी पापा दोनों मुझसे बहुत प्यार करते हैं और मेरे लिए नए कपड़े लाते हैं.

इस पूरी घटना की जानकारी सोनी ने अपने अधीक्षिका एवं शिक्षिका को दिया और कहा कि “मैडम ! मेरे जीवन में यह बदलाव जीवन कौशल की शिक्षा के कारण हुआ है और अब मैं बहुत खुश हूँ.”

सोनी का कहना है कि “अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए जो कार्य लड़के कर सकते हैं वो कार्य लड़कियां भी तो कर सकती हैं और पैसों के कारण कभी भी पढाई नहीं छोड़ना चाहिए.”

हर पल खुशी मनाता चल

रचनाकार - श्वेता पाटनवार

रोना धोना छोड़ दे अब, तू हंसता चल मुस्काता चल.
फूलों से कुछ सीख ले बंदे, हर पल खुशी मनाता चल.
भूल जा उस दुख के पल को, जो तुझको रोज सताता है.
यादों में ले आ उस पल को, जिस पल तू खुशी मनाता है.
दुख के दिन जाएंगे बिसर, तू गीत खुशी के गाता चल.
फूलों से कुछ सीख ले बंदे, हर पल खुशी मनाता चल.

राहों में जो कांटे आये, हिम्मत से दूर भगाना तू.
अगर है मंजिल पाना है साथी, न रुकना चलते जाना तू.
तेरा मेरा छोड के अब तू, सबको गले लगाता चल.
फूलों से कुछ सीख ले बंदे, हर पल खुशी मनाता चल.

हिंदी प्रशिक्षण को समर्पित

रचनाकार - शिवांगी पशीने

ले चले हम हिंदी प्रशिक्षण साथियों,
अब तुम्हारे हवाले शिक्षण साथियों..
वर्ण जमती गई, मात्रा थमती गई,
प्रशिक्षण को न हमने रुकने दिया.
रूक गए प्रशिक्षण तो कोई गम नहीं,
भाषा को न हमने रुकने दिया
कक्ष-कक्ष में रहा वर्णपन साथियों.
अब तुम्हारे हवाले शिक्षण साथियों..
ले चले हम हिंदी प्रशिक्षण साथियों,
अब तुम्हारे हवाले शिक्षण साथियों.
मात्राओं के स्थान बहुत हैं मगर,
संयुक्त अक्षर की रुत रोज़ आती नहीं.
मात्रा और वर्ण, दोनों मिलके रहे,
वाक्यों को ये समझाती रही.
आज भाषा बनी है, मन के भाव साथियों,
अब तुम्हारे हवाले शिक्षण साथियों.
ले चले हम हिन्दी प्रशिक्षण साथियों.
अब तुम्हारे हवाले शिक्षण साथियों..

कलश पादप

रचनाकार -पेश्वर राम यादव

कीचड़- दलदल में रहती हूँ,
कलश जैसी दिखती हूँ.
मुँह में चिपचिपा द्रव लाती हूँ,
कीट -पतंगो को फँसाती हूँ.
नाइट्रोजन तत्व पाती हूँ,
कलश पादप कहलाती हूँ.

किचन गार्डन एक, फायदे अनेक

रचनाकार - मनोज कुमार पाटनवार

उद्देश्य:- किचन गार्डन से पर्यावरण एवं जैविक खेती की समझ के साथ बच्चों को मध्याह्न भोजन में ताजी हरी सब्जियों का लाभ देना एवं विज्ञान के कुछ अवधारणाओं की समझ विकसित करना.

क्रियाविधि :- स्कूल में किचन गार्डन को बांस से घेराबंदी कर स्कूल के पीछे निर्माण किया गया है जिसमें जून-जुलाई में भिंडी, टमाटर, खीरा, लौकी तथा नवंबर दिसंबर में धनियां, मेथी, गोभी, बैगन, टमाटर, लाल भाजी, मूली, पपीता आदि की बुवाई की गयी है. जिससे मध्याह्न भोजन में बच्चों को दो सब्जी खाने का फायदा मिल रहा है साथ ही शुद्ध ऑक्सीजन भी प्राप्त हो रही है प्रातः भ्रमण के लिए बच्चे कहीं और न जाकर किचन गार्डन में ही आते हैं इनके अलावा कक्षा छठवीं के अध्याय सजीव की संरचना में वृक्ष, लता, झाड़ी तथा कक्षा आठवीं के खाद्य उत्पादन एवं प्रबंधन को किचन गार्डन में ले जाकर प्रत्यक्ष पढ़ाने से अवधारणाओं कीअच्छी समझ बनती है जैसे छरहटा विधि बताने के लिए लाल भाजी, मेथी, सरसों तथा रोपण विधि को समझाने के लिए बैंगन, टमाटर, गोभी को दिखाकर बताया गया जिससे बच्चों में आसानी से समझ विकसित होती है

नवभारत

किचन गार्डन से बच्चों को मध्यान्ह भोजन में मिल रही ताजी सब्जी

कालीपुर प्राथमिक व माध्यमिक शाला बना मिसाल, विकासखण्ड के स्कूलों में यहीं से पहुंचती है सब्जी

बच्चों और शिक्षकों ने बना डाला विकसित किचन गार्डन

लाभ :-

1. बच्चे भविष्य में कृषि कार्य में रुचि लेकर आत्म निर्भर बन सकते हैं.
2. किचन गार्डन बच्चों को आकर्षित करता है बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के साथ प्रेम की भावना उत्पन्न करता है.
3. वृक्ष, झाड़ी, लता की समझ बनती है.
4. मिट्टी जुताई के लाभ को जानेंगे एवं स्वयं करके किचन गार्डन के माध्यम से छरहटा, बीज बेधन तथा रोपण विधि को भी समझेंगे.

विशेष:-

1. किचन गार्डन की हरी ताजी सब्जियों के जायकेदार होने से मध्याहन भोजन, बच्चे बड़े ही चाव से खाते हैं.
2. बच्चे पर्यावरण के महत्व को समझ पौधों की सुरक्षा करते हैं.

छत्तीसगढ़िया लईका

रचनाकार - डागेश्वर प्रसाद साहू

चटनी बासी ला खाबो जी,
स्कूल पढ़े बर जाबो जी.

अंकित जाही शिखा जाही,
मोन्टू संग म दीक्षा जाही.

हिंदी म हम पुस्तक पढ़बो,
छत्तीसगढ़ी म गोठियाबो.

पढ़के आगू बढ़बोन जी,
राज नवा हम गढ़बोन जी.

माथे को कुछ सहला दे माँ

रचनाकार:- अशोक शर्मा

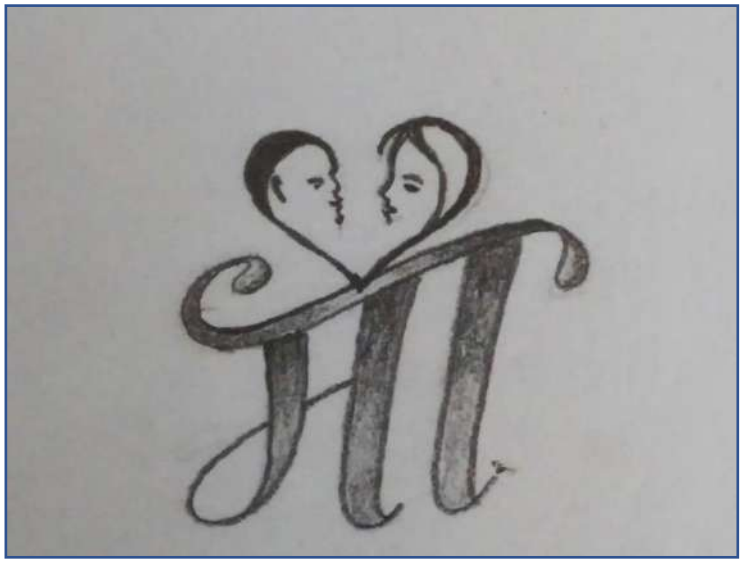

माथे को कुछ सहला दे माँ,
दुःख को थोड़ा बहला दे माँ,
जी हल्का हो कुछ बोलूँ मैं,
या फिर थोड़ा-सा रो लूँ मैं,
भागदौड़ में दिन बीता है,
रातें बेहद सर्द हैं माँ,
सर में काफी दर्द है माँ,
सर में काफी दर्द है माँ.

रोज बिछुड़ते हैं कुछ अपने,
खूब दगा देते हैं सपने,
डरकर अक्सर उठ जाता हूँ,
साये से भी घबराता हूँ,
नींदें बंजर हो गईं कबसे,
जीवन जैसे नर्क है माँ.

सर में काफी दर्द है माँ,
सरमें काफी दर्द है माँ.

किसकी आँख यहाँ पर नम है,
हरेक आँख में आँसू कम है,
होड़ लगी है दौड़ रहे सब,
संस्कार को छोड़ रहे सब,
हर चेहरा है एक मुखौटा,
चढ़ा सभी पे वर्क है माँ.
सर में काफी दर्द है माँ,
सर में काफी दर्द है माँ.

किस कंधे पर सर रखते हम,
किसके सर पर बोझ यहाँ कम,
सबका अपना अपना रोना,
खोज रहे सब खोया सोना,
सारे चेहरे एक सरीखे,
कहाँ किसी में फर्क है माँ?
सर में काफी दर्द है माँ,
सर में काफी दर्द है माँ.

तार-तार हैं सारे रिश्ते,
नेकी के अब कहाँ फरिश्ते,
कौन किसी का सगा यहाँ पर,
भाई देगा दगा यहाँ पर,
हर रिश्ते का केंद्र अर्थ है,
बाकी बातें व्यर्थ है माँ

सर में काफी दर्द है माँ,
सर में काफी दर्द है माँ..

रास्ता रोके खड़ा अँधेरा
किस खिड़की से आये सवेरा?
सूरज दुबका पड़ा माँद में,
लगा हुआ है ग्रहण चाँद में,
दूर-दूर तक पसर गई है,
काफी गहरी बर्फ है माँ.
सर में काफी दर्द है माँ,
सर में काफी दर्द है माँ.

चल तुलसी तुझे राम बुलाये,
चल तुलसी तुझे श्याम बुलाये,
नाल गड़ी है जिस आँगन में,
वो गलियाँ वो ग्राम बुलाये,
कहने को हैं आँसू लेकिन,
आँखों से ये अर्घ्य है माँ
सर में काफी दर्द है माँ,
सर में काफी दर्द है माँ.

Ray of Hope

Creator: -Devika Sahu

A plump little girl in my class,
White as feather shines like a glass.
She talks like honey, she walks like a lamb,
With a leap in ever step she slides on every ramp.
Everyone knows no one can be as happy as she is.
Everyone wishes to be like she is.
But I have seen her sobbing so alone.
I have seen her wiping her tears on her own.
I couldn't dare to ask her why,
Coz no one is such an introvert as am I.
But hesitatingly I asked her one day,
I knew she won't answer or even walk away.
But I had to ask as I really care.
She was sitting with grace on her chair.
She didn't answer me as expected,
She didn't even look at me as she neglected.
But she came to me after some time,
She was looking like a pale moon who lost her shine.
Tears rolled down from her eyes as she tried to speak.
She couldn't utter a word, she seemed so fragile and weak.
I stood up and patted on her shoulder.
She said she didn't know what has happened to her,
She feels so alone as if no one's with her.

She feels sometimes so anxious and sometimes depressed.
She spends sleepless nights and the days are restless.
Thoughts of killing herself haunts her mind,
Cause of her pain, she doesn't know how to find.
I knew she needs immediate help,
Her state of mind can destroy herself.
I decided to disclose her state of mind with her family,
They understood and with love and support, she was rescued finally.
She looked at me with tears of gratitude,
I was contented that I saved a shining star and saluted her for her fortitude.
Since then I owed to hold the hands of drowning souls,
And adjuring everyone has become my goal,
To be a "ray of hope", to uplift everyone's self-esteem,
To save every child who is becoming the prey of his own deem.

परिवार

रचनाकार - डिजेन्द्र कुर्रे

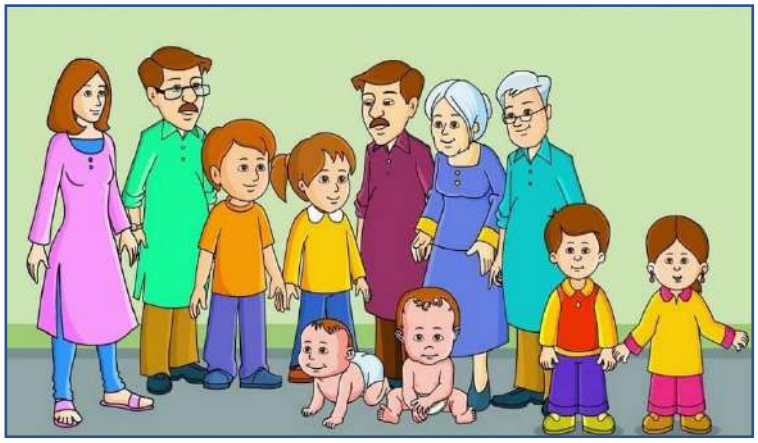

एक गांव में सोनूराम नाम का वृद्ध रहता था उसके नौ बेटी और चार बेटे थे. परिवार बहुत बड़ा था. वह परिवार का लालन-पालन खेती मजदूरी करके करता था. सोनूराम की पत्नी बहुत परेशान रहती थी. परिवार बड़ा होने के कारण हरदम उनके बाल बच्चे झगड़ते रहते थे. सुबह होते हि चाय रोटी के लिए झगड़ते, स्कूल जाते समय पुस्तक कापी के लिए झगड़ते.

मां काफी परेशान रहती थी फिर भी मां की ममता सभी बच्चों को लाड़-प्यार देने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ती. एक दिन सोनू के बेटों रंगा और बिल्ला में कपड़ों के लिए हाथापाई हो गयी. रंगा की शर्ट को बिल्ला ने पहन लिया था. बिल्ला ने गुस्से में शर्ट फाड़ दी जब उसके पिताजी काम करके घर आये तो बिल्ला को खूब डांट फटकार पड़ी.

वे एक-एक पैसे जोड़ कर इकट्ठा करते लेकिन परिवार चलाना इतना आसान नहीं था. आटे-दाल का भाव सोनूराम को परिवार के पालन-पोषण से पता चल गया. एक दिन अचानक रंगा की तबीयत बहुत खराब हो गयी उसकी मां उसकी हालत देखकर जोर-जोर से रो रही थी पैसे के लिए इस घर उस घर दर-दर भटक रही थी अंत में पैसे के अभाव में उसके बेटे ने दम तोड़ दिया. सोनूराम भी सोचने

लगा इतना ज्यादा बच्चों वाला परिवार चलाना बहुत कठिन है मन ही मन खुद रोने लगा. बहुत पश्चाताप किया.

सोनुराम के जीवन में एक ऐसा बदलाव आया कि उसे गांव के सरपंच बनने का अवसर मिला. तब गांव का मुखिया होने के नाते वह पूरे गांव का विकास कर गांव को तरक्की की ओर ले गया. उसने गांव में हम दो हमारे दो की योजना की पहल कर लोगों को जागरूक किया. उस गांव में किसी भी परिवार ने अब 2 बच्चे से अधिक बच्चे पैदा नही किये. धीरे-धीरे उस गांव में खुशहाली आ गई लोग समझ गये कि जनसंख्या बढ़ाने से कोई लाभ नहीं है इसलिए छोटा परिवार ही सर्वोत्तम है.

सीख:- छोटा परिवार सुखी परिवार.

किताबें

रचनाकार:- भूमिका राय

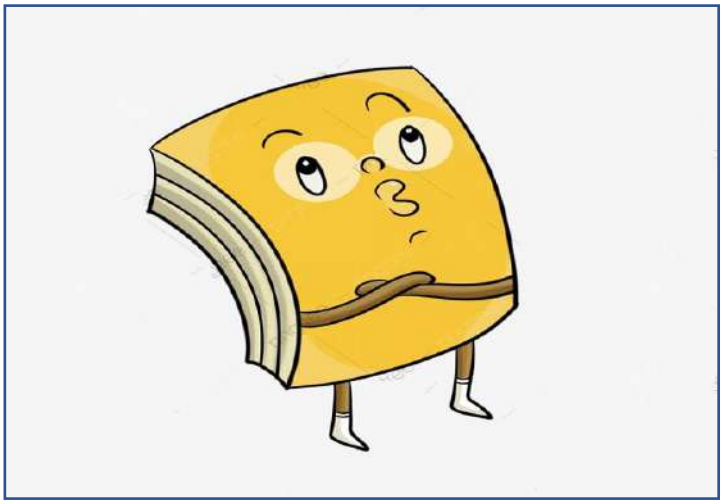

चंद अच्छी किताबें,
सेल्फ से झाँकती है,
और हम उन्हें देखकर,
मन ही मन इतराते है.

हम स्वयं हैं दुनिया की,
सबसे अच्छी किताब,
बस स्वयं को ही हम
पढ़ने से कतराते है..!

मेरा सरकारी स्कूल

रचनाकार:- संतोष पटेल

मेरा सरकारी स्कूल लगता,
मेरे बच्चों को कूल.
खुद करके सीखते सभी यहाँ,
नही करते कोई भूल.
मेरा सरकारी स्कूल लगता,
मेरे बच्चों को कूल.
खेल- खेल में पढ़ना सब सीखते,
रटने का नही यहाँ कोई रूल
मेरा सरकारी स्कूल लगता,
मेरे बच्चों को कूल
सभी विषय खुशियों से पढ़ते,
खुद की अपनी भाषा गढ़ते.
व्यर्थ में नहीं जाता समय कूल,
मेरा सरकारी स्कूल लगता,
मेरे बच्चों को कूल..

पर्यावरण संबधी पहल

प्रेषक - चानी ऐरी

शाला व घर दोनो ही जगह मैं जल संरक्षण व प्लास्टीक मुक्त वातावरण की पहल करते आ रही हैं.

प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने की शिक्षिका सुश्री चानी ऐरी के द्वारा गांव पंधी व शाला में विशेष रूप से किया जा रहा है. ईको क्लब गठन कर के बच्चो के साथ

1. ऐरी मैडम स्वंयम व अपनी शालाओं के बच्चों के द्वारा पेपर व कपडे के थैलै सील कर बना कर शाला परिसर व गांव में घर जा जा के दैने का विशेष अभियान चलाया है
2. गांव के सार्वजनिक स्थलो की सफाई
3. शाला के मध्यान भोजन व अन्य भोज्य वेस्ट पदार्थो से खाद बनाने का काम हाल ही में शाला मे ही शुरु किया है.
4. द्वियांग बच्चों का सहयोग भी प्रर्यावरण संरक्षण मेले कर शाला परिसर को सुंदर बनाती है. वो बच्चे इनके साथ सहर्ष कार्य करते है
5. सफाई का महत्व बता कर बहुत से रोगों एवं प्रदुषण से बचाने का प्रयास

<u>महासिवरातरी अउ हर हर महादेव</u>

रचनाकार:- डॉ. जयभारती चंद्राकर

महासिवरातरी परब हर हमर हिन्दुमन के अब्बड़ महत्व के तिहार हरे. इही तिहार हर भगवान संकर के पूजा-पाठ अउ अराधना के तिहार हरे. हर बछर बारह ठन सिवरातरी परथे तेमा महासिवरातरी के अब्बड़ महत्व हवय. फागुन कृस्न चतुर्दर्सी के सिवरातरी हर बिसेस हरे. इही सिवरातरी के दिन भगवान संकर हर बरम्हा ले रूद्र के रूप धरिस. परलय के समे इही दिन प्रदोस काल म भगवान सिव हर तांड़व करत रिहिस. उही बेरा ब्रम्हांड़ ल तीसर आँखी के ज्वाला ले भस्म कर दीस. ऐखर सेती इही दिन अउ रथिया ल महासिवरातरी अउ कालरातरी कहे जथे.

महासिवरातरी के दिन भगवान सिव के बिहाव हर पारवती के संग होय रिहिस. तीनों भुवन के सुघ्घर तिपुरा सुन्दरी सीलवती गौरी ले संकर भगवान के बि हाव होइस. इही जम्मो गोठ हर हमर पुरान गरूड़ पुरान,पद्मपुरान, स्कंद पुरान, सिव पुरान अउ अग्नि पुरान म महिमा के बखान हवय.

कहे गे हवय, भगवान संकर हर अब्बड़ भोला भंड़ारी हवय. जेन हर मन अउ हिदय ले सुरता करथे तेखर उप्पर संकर भगवान जल्दी खुस हो जथे. भगवान सिव के मुंड़ी म एक लोटा जल रितोय ले अउ बेल पाना चघाय ले, रथिया जागरन करे ले ओहर मन के कामना ल पूरा कर देथे. भगवान सिव के वेस हर तको अब्बड़े किसिम के हरे. तन म मसान के राख ल पोते रहिथे. गला म साँप के माला, कंठ म विष अउ जटा म गंगा ल धरे, माथा म तीसर आँखी ल खोलत बिकराल अउ बइला म बइठे जम्मो भगत मन के मंगल करत रहिथे.

सिव के अरथ कल्यान हवय. सिव ल भोलेनाथ,सिवसंकर,सम्भू,नीलकंठ रूद्र तको कबे जथे. हमर सब्बो देवी-देवता, देवता धामी ले बड़का महादेव हर कहाथे. महादेव हर राक्छक मन के तको देवता हरे. आज इही संसार म भगवान सिव के उपासक अउ मनइया जम्मो जगह बगराय हवय. अभे सिव रातरी म जम्मो सिव मंदिर म मेला-मड़ई भराथे. कांवरिया मन कांवर म जल ल लोटा म धर के अब्बड़ दूरिहा ल लानथे अउ सिव मंदिर म सिव लिंग म रितोथे अउ अपन मनोकामना ल पा जथे.

हमर छत्तीसगढ़ हर सिव उपासक के गढ़ हवय. इहा जगह-जगह प्राचीन सिव मंदिर हवय अउ स्वयंभू सिव लिंग तको हवय. जेखर महिमा अब्बड़ हवय.

गरियाबंद जिला म मरौदा गाँव म स्वयंभू भूतेश्वर महादेव हरे, जेला भकूर्रा महदेव तको कहिथे. जेखर महिमा अपरंमपार हवय. वोला विस्व के सबले बड़का सिवलिंग के उपाधि मिले हवय. जेमा महासिव रातरी म बड़का मेला भराथे. दूरिहा-दूरिहा ले लोगनमन सिवलिंग के दरसन बर आथे अउ अपन मन के मुराद ल पा जथे.

परीक्षा

रचनाकार:- रोहित शर्मा "राही"

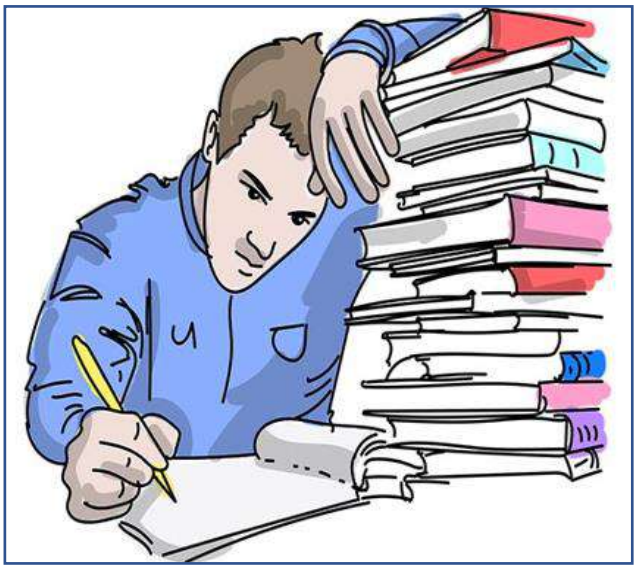

लो आ गयी परीक्षा,
है प्रभु की इच्छा.

साल भर कुछ पढ़ा नहीं,
ज्ञान मन में गढ़ा नहीं.
चिंता भयंकर छायी है
परीक्षा की बेला आयी है.

वर्ष भर मैंने बिता दी
मस्ती और मौज उड़ा ली
टीवी क्रिकेट और खेल
साल बीता इसी रेलमपेल.

आज मन सिसक रहा
तन बहुत झुलस रहा.

सुन परीक्षा की खबर
सर चढ़ गया ज्वर.

पढ़ लेता अगर साल भर
सुन लेता शिक्षको की पल भर.
आज यह दिन न देखता
आँसुओ से मन न पिघलता.

आज प्रभु से है दुआ
पार लगा दे किसी तरहा.
अगले बार ऐसा न करूँगा
मन लगाके पूरे साल पढ़ूंगा.

बस्तर की अनोखी छटा

रचनाकार:- रमेश कुमार टंडन

चित्रकूट की छटा देखो,
पहाड़ों से निकलती घटा देखो.
कितनी मनोरम है छटा,
यहां की सांस्कृतिक कला देखो..

कुटुम्बसर की गुफा देखो,
अंधी मछली की कुआं देखो.
केशकाल घाटी है निराली,
तीरथगढ़ की चित्रकला देखो..

पहाड़ों की है झुंड देखो,
नदियां की है गुंज देखो.
मधुर गीत सुनाती है झरने,
दुनिया की जन्नत है..

साल सागोन की बाग है देखो,
आम महुआ तेंदु चार है देखो.
बांस की यहां घरोंदा है,
बोली की कितनी मिठास है देखो..

बस्तर की माड़ निराली है देखो,
अनसुलझी अबुझ कहानी है देखो.
प्रकृति की धरोहर है बस्तर,
भारत की यह निशानी है देखो..

तीर कमान की चाल को देखो,
करते कैसे शिकार को देखो.
दिल को छू लेती है बस्तर,
कितनी सभ्यता पुरानी है देखो..

बस्तर की हर जगह देखो.
चित्रकूट की छटा देखो.....

पक्का बंगाला

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

बखरी के बंगाला,
बढ़िया लाल-लाल.
सील मं पीस के,
येकर देख ले कमाल.

सुवाद मुताबिक नून,
अउ मिर्ची नान-नान.
मस्त हरियर धनिया,
ये चटनी के कमाल.

थोरकिन जिभिया ले जी,
मस्त चटका मार के
थारी-थारी भात मं,
चीखना हे दार के.

फागुन तिहार

प्रेषक -धारिणी सोरी

होली का त्योहार पूरे देश में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. यह त्योहार रंग, उमंग और खुशियों का त्योहार होता है. लोग मन के बैर- भाव को भूलकर प्रेम से गुलाल लगाकर गले मिलते हैं, और एक दूसरे को बधाईया देते हैं. सभी अपने बड़ो से आशीर्वाद लेते हैं.

हर त्योहार मनाने के अपने-अपने रीती-रिवाज, परंपरा या वैज्ञानिक आधार होते हैं. आज हम अपने छत्तीसगढ़ में होली मनाने की इस रीत के बारे में जानेंगे. बुजुर्गों से पूछने पर पता चला कि हम होली का त्योहार क्यो मनाते हैं? और इसके पीछे क्या कारण है? जबकि हम बचपन से स्कूलों में यह पढ़ते आ रहे है कि होलिका नाम की एक असुर राजकुमारी ने प्रहलाद को अपनी गोद में बैठाकर अग्नि में जलाकर मारने का प्रयत्न किया और स्वयं जलकर भस्म हो गयी.

बुजुर्ग दादा जी ने बताया कि हम हिंदी महीने के अनुसार अपने तीज त्योहारों का आयोजन करते है. चैत्र में नया साल मनाते हैं, और फागुन के साथ ही साल की समाप्ति हो जाती है. साल का अंतिम माह "फागुन" के आखरी दिन में फागुन का त्योहार मनाया जाता है. इस दिन हम इस साल को "अंतिम विदाई" देते हैं, साथ ही अपने आने वाले नए वर्ष में सुखद जीवन की कामना करते हुए रंग-

गुलाल लगाकर फागुन को बिदा करते हैं. फागुन के कुछ दिन पहले से ही लोग फ़ाग गीत गाते हैं,जो कि फागुन के बाद तेरह दिन तक चलता रहता है.

रंग-गुलाल लगाकर इस त्योहार को इसलिए मनाते हैं क्योंकि जब भी किसी को अंतिम विदाई देते हैं तो गुलाल लगाकर उसके प्रति अपना स्नेह, प्रेमभाव प्रकट करते हैं,चाहे वह मृत व्यक्ति हो, कार्यमुक्त या सेवानिवृत्त व्यक्ति हो उनके साथ व्यतीत किए मीठी यादों को संजोकर रखते हैं, बुरे समय को भूलते हैं. ठीक उसी प्रकार फागुन महीने के अंतिम दिन लोग एक दूसरे को रंग लगाकर अपना स्नेह प्रकट करते हैं. आने वाला समय अच्छा हो यह आशीर्वाद देते हैं, और इसलिए छत्तीसगढ़ में लोग इसे "फागुन तिहार" के नाम से जानते हैं.

हमारे छत्तीसगढ़ में यह त्योहार एक तरीके से "काठी" अर्थात छुआ(मृतक कार्य) की तरह मनाया जाता है जिसमे फागुन के एक दिन पूर्व होलिका दहन(दाह) किया जाता है, जो कि हमारे अंदर निहित बुराइयों के दहन का प्रतीक होता है. अगले दिन रंग-गुलाल लगाया जाता है, और तेरह दिन बाद(तेरहवीं) "धुर तिहार" होता है, उस दिन पूरे घर की फिर से लिपाई करके साफ करते है और पुनः रंग खेलते हैं. फ़ाग गीत गाते हैं. इस तरह हमारे छत्तीसगढ़ में फागुन का त्योहार हर्षोल्लास और प्रेम भाव से मनाया जाता है.

Dream Big

Creator: -Devika Sahu

Dream big,
You never know what you can achieve,
Always keep your bags packed,
Whatever opportunities you get, just grab.
Every mountaineer is initially on below the mountain foot,
But Till he reaches the peak his faith in himself doesn't shook,
Just conquer your fear,
And your goals are near.
Every river is destined to be a sea,
Just your beliefs and knowledge makes you free,
Hold the hands of the fellow wayfarers and walk,
Till you finish, please don't stop.
Be a story which encourages every halcyon,
Dream big my dear, just keep moving on.

आइये पत्तल की परंपरा को पुनर्जीवित करें

प्रेषक - मंजूषा तिवारी

पत्तलों से लाभ:

1. सबसे पहले तो उसे धोना नहीं पड़ेगा, इसको हम सीधा मिटटी में दबा सकते है.
2. पानी नष्ट नहीं होगा.
3. कामवाली नहीं रखनी पड़ेगी, मासिक खर्च भी बचेगा.
4. केमिकल उपयोग नहीं करने पड़ेंगे.
5. केमिकल द्वारा शरीर को आंतरिक हानि नहीं पहुंचेगी.
6. अधिक से अधिक वृक्ष उगाये जायेंगे, जिससे कि अधिक आक्सीजन भी मिलेगी.
7. प्रदूषण भी घटेगा.
8. सबसे महत्वपूर्ण झूठे पत्तलों को एक जगह गाड़ने पर, खाद का निर्माण किया जा सकता है, एवं मिटटी की उपजाऊ क्षमता को भी बढ़ाया जा सकता है.
9. पत्तल बनाने वालों को भी रोजगार प्राप्त होगा.

10. सबसे मुख्य लाभ, आप नदियों को दूषित होने से बहुत बड़े स्तर पर बचा सकते हैं, जैसे कि आप जानते ही हैं कि जो पानी आप बर्तन धोने में उपयोग कर रहे हो, वो **केमिकल** वाला पानी, पहले नाले में जायेगा, फिर आगे जाकर **नदियों** में ही छोड़ दिया जायेगा. जो **जल प्रदूषण** में आपको सहयोगी बनाता है.

आजकल हर जगह भंडारे, विवाह शादियों, पार्टियों में डिस्पोजेबल की जगह इन पत्तलों का प्रचलन करना चाहिए.

आपकी लिखावट आपके बारे में क्या बताती हैं

रचनाकार:- गौतम कुमार शर्मा

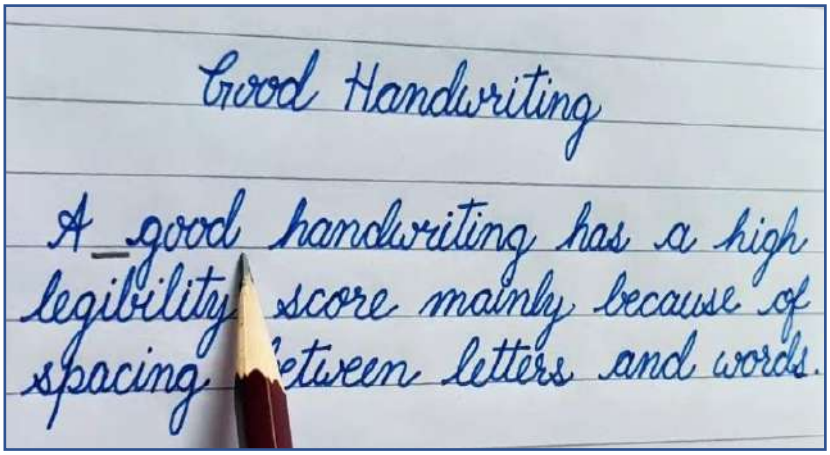

किसी भी व्यक्ति की लिखावट से आप उस व्यक्ति के चरित्र के बारे में काफी कुछ जान सकते है. वैसे कौन सोच सकता था की हमारी handwriting में भी कोई राज छिपा हुआ हो सकता है! जैसे कि कहा जाता है, 'कलम की शक्ति तलवार की धार से कई गुना अधिक शक्तिशाली होती है.' इस कथन के पीछे बहुत गहरा अर्थ छुपा हुआ है! अगर आप लोग भी अपनी handwriting से अपने व्यक्तित्व के बारे में जानना चाहते हैं तो तैयार हो जाइये. हम दावे से कह सकते है कि इन जानकारियों से आप काफी हद तक सहमत ही होंगे, क्योंकि ये काफी हद तक सही ही होती हैं! तो आईये जानते है कुछ ऐसी ही बातों के बारे में:-

1. आपकी Handwriting के अक्षरों का साइज़
    - **छोटा अक्षर :** अगर आप छोटे अक्षरों का इस्तेमाल करते हैं तो आपकी एकाग्रता बहुत अच्छी है, जीवन के प्रति भी आपका नजरिया संकीर्ण और अपने उद्देश्य के प्रति आपका ध्येय भी निश्चित होता है.
    - **बड़ा अक्षर :** अगर आप बड़े अक्षरों का इस्तेमाल करते हैं तो जीवन के प्रति आपका नजरिया बहुत ही खुला हुआ होता है और आप आसानी से बोरियत को महसूस नहीं करते है इसके साथ ही आपको मान सम्मान प्राप्त करने की बहुत इच्छा होती है!

2. लिखते समय अक्षरों पर दबाव
    - **अधिक दबाव :** यदि आप लिखते समय अक्षरों पर अधिक दबाव डालते है तो आप बहुत ही भावुक किस्म के इंसान है!
    - **कम दबाव :** लिखते समय यदि आप अक्षरों पर कम दबाव डालते है तो आप अपनी भावनाएं को जाहिर नही होने देते है!

3. Handwriting में अक्षरों के बीच का अंतर

    - **कम अंतर :** यदि आपकी लिखावट में अक्षरों के बीच का अंतर कम है तो आप समय के प्रबंधन में निपुण नहीं हैं.
    - **बराबर अंतर :** यदि आपकी लिखावट में अक्षरों के बीच का अंतर बराबर है तो आपका जीवन बेहद सुलझा हुआ होता है. चीज़ों का प्रबंधन अच्छे तरह से करने के साथ ही आप मानसिक रूप से भी काफी सुलझे हुए होते हैं.
    - **अधिक अंतर :** यदि आपकी लिखावट में अक्षरों के बीच का अंतर अधिक है तो आपको आज़ादी में रहना काफी पसंद है. साथ ही आपको व्याकुल होना पसंद नहीं है. आपको अपना व्यक्तिगत दायरा काफी पसंद है.

4. आपकी Handwriting किस ओर झुकी है?
    - **बायीं ओर :** यदि आपकी handwriting बायीं ओर झुकी हुई है तो आप अंतर्मुखी हैं और आपको आजादी में रहना पसंद हैं.
    - **दायीं ओर :** यदि आपकी handwriting दायीं ओर झुकी हुई है तो आपको लोगों से मिलना-जुलना, घूमना-फिरना, बातें करना काफी पसंद है लेकिन वो भी आपके अपने मूड के हिसाब से ही.
    - **सीधा :** अगर आपकी handwriting सीधी है तो आप अपनी भावनाओं को अच्छे से नियंत्रित करना जानते हैं और भावनाओं को अपने मन मुताबिक ज़ाहिर करते हैं. चाहे किसी भी तरह का काम हो आप बहुत सोच समझ कर करते है.

5. आपके वाक्य किस दिशा में जाते हैं?
    - **ऊपर :** अगर आपके handwriting के वाक्य ऊपर की और जाते हैं तो आपका व्यक्तित्व आशावादी है और आप हर समय अच्छे मूड में रहने की कोशिश करते हैं.
    - **नीचे :** अगर आपके handwriting के वाक्य नीचे की और जाते हैं तो आप निराशावादी है और ये आपके तनावग्रस्त और थके हुए होने की तरफ इशारा करता है.
    - **लहरदार :** अगर आपके handwriting के वाक्य लहरदार हैं तो इससे पता चलता है कि आपका दिमाग स्थिर नहीं रहता है. और आप काफी चंचल स्वभाव के है.

6. आप अपने अक्षरों को कैसे जोड़ते है?
    - **जुड़े हुए :** अगर आपके handwriting में अक्षर जुड़े हुए हैं तो आप तार्किक, व्यवस्थित हैं और सोच समझ कर निर्णय लेते हैं.
    - **अलग-अलग :** अगर आपके handwriting में अक्षर अलग-अलग हैं तो आप बुद्धिमान हैं और साथ में सहज ज्ञान से परिपूर्ण हैं.

7. आप अंग्रेजी के 'i' letter को कैसे लिखते हैं?
    - **चुलबुले आकार में :** अगर आप अंग्रेजी के 'i' अक्षर को चुलबुले आकार में लिखते है! तो आप बेहद चंचल और रचनात्मक स्वभाव के है! साथ ही आपको भीड़ से अलग हटकर दिखना पसंद है.
    - **अव्यवस्थित :** अगर आप अंग्रेजी के 'i' अक्षर को आप अव्यवस्थित करके लिखते हैं तो आपको किसी भी तरह की अव्यवस्था पसंद नहीं और आप हर छोटी से छोटी बात पर नज़र रखते हैं.

8. अंग्रजी भाषा के 't' letter की ऊपरी लाइन कैसे बनाते हैं?
    - **ऊपर:** अगर कोई व्यक्ति अंग्रजी भाषा के 't' अक्षर की ऊपरी लाइन को उपर की तरफ बनाते है तो ऐसे लोगों का आत्मसम्मान बहुत अधिक ऊंचा होता है और इसी वजह से ऐसे लोग दूसरों की तुलना में बहुत बड़ा सोचने की क्षमता रखते हैं.

- **नीचे :** इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति अंग्रजी भाषा के ‘t’अक्षर की उपरी लाइन को नीचे की तरफ बनाते है तो ऐसे व्यक्ति में आत्मसम्मान की कमी पाई जाती है और ऐसे व्यक्ति अपनी काबिलियत के हिसाब से खुद को बहुत कम आंकते है. ऐसे व्यक्ति अक्सर अपनी काबलियत को नहीं पहचान पाते है.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

मित्रता

एक गांव में दो मित्र रहते थे. एक का नाम था चंदन, दूसरे का गुलाब. दोनों की मित्रता इतनी गहरी थी कि लोगों को इनसे बड़ी ईर्ष्या होती थी. कई लोग यह कोशिश भी करते थे कि किसी तरह इनकी मित्रता टूट जाए.

कुछ दिनों बाद चंदन के परिवार को दूसरे गांव में जाकर बसना पड़ा. अब इनका रोज का मिलना बंद हो गया. पर इन्होंने एक दूसरे को चिट्ठियां लिखनी शुरू कर दीं. बहुत दिनों तक ये सिलसिला चलता रहा. फिर पता नहीं क्या हुआ,गुलाब की चिट्ठियां आनी बंद हो गईं. चंदन बड़ी प्रतीक्षा करता था. उसने गुलाब को लिखना जारी रखा पर गुलाब का कोई उत्तर नहीं आता था.

चंदन अब उदास रहने लगा था. उसे समझ में नहीं आता था कि अचानक ये क्या हो गया. एक दिन वह अपने पिताजी से पूछकर अपने पुराने गांव की ओर चल पड़ा.

डिजेन्द्र कुर्रे जी द्वारा पूरी की गई कहानी

गुलाब और चंदन की मित्रता इतनी गहरी थी कि शब्दों में बयां नहीं की जा सकती थी. चंदन के जाने के पश्चात गुलाब पूरी तरह से टूट चुका था. सच्ची गहरी मित्रता के कारण अपना मानसिक संतुलन खो बैठा था. गली गली फटे पुराने कपड़े पहन कर घूमता और अपने मित्र को ढूंढता था. जिसको भी मिलता चंदन-चंदन कह के गले लगाता. इसी बीच अचानक चंदन अपने मित्र गुलाब से मिला. अपने मित्र को देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गये. घर ले जाकर उसके लिए नए कपड़े लाए और उसे पहनाये, अपने पुरानी मित्र को देखकर गुलाब की याददाश्त पुनः वापस आ गयी. वह अपने मित्र को देखकर खुशी से फूला नहीं समाया. दोनों मित्र आपस में मिल गए. दोनों मित्र सच्ची मित्रता की मिसाल थे.

कन्हैया साहू (कान्हा) जी द्वारा पूरी की गई कहानी

चन्दन अपने पुराने गांव में जा कर देखता है कि गांव में बहुत ही कम लोग निवास कर रहे हैं क्योंकि उस गांव में पिछले साल अकाल पड़ा था. इसलिये अधिकांश लोग अपने परिवार के साथ काम की तलाश में दूसरी जगह चले गए थे. गुलाब का परिवार भी गांव से बाहर चला गया था, जिससे अपना गुजर बसर कर सके. अब चंदन को समझ में आ गया कि उसका मित्र गुलाब उसकी चिट्ठियो का जवाब इसलिए नहीं दे रहा था क्योंकि गांव से बाहर होने के कारण चिट्ठियां उसे मिल ही नहीं रही थीं. चंदन को यह बात समझते देर न लगी कि उसका मित्र परिवार सहित संकट के दौर से गुजर रहा है. गांव में दूसरे लोगों से गुलाब का पता पूछकर चंदन उस जगह पहुँच गया जहाँ गुलाब अपने परिवार के साथ रहता था. उसने देखा कि कठोर परिश्रम करने के बाद भी उनका जीवन बहुत कष्टप्रद था. दोनों मित्र मिलकर बहुत खुश हुये. गुलाब ने बताया कि उनके दिन किस प्रकार कष्ट से गुजर रहे हैं. तब चंदन ने अपने मित्र की मदद करने का निश्चय किया. वह गुलाब के परिवार को अपने घर ले आया, उसको अपने घर रखकर सेवा करने लगा. उसने गुलाब को नए कपड़े, जूते दिलवाये और अपने परिचित दुकानदार के यहाँ काम पर लगा दिया. उसके रहने के लिए एक छोटा सा घर भी दिला दिया. अब गुलाब को नियमित काम मिल गया जिससे उसके हालात धीरे-धीरे सुधरने लगे और जो काम के बदले में मिलता उसमें से कुछ बचा कर उसने एक साल में अपने लिए पक्का घर बना लिया. अब गुलाब अपने माता - पिता को भी अपने पास ले आया. सभी लोग अब सुख पूर्वक जीवन जीने लगे. यह देखकर चंदन को भी बहुत अच्छा लगता कि अब उसका मित्र परिवार सहित उसके पास रहकर सुख शांति से जीवन व्यतीत कर रहा है. अब पूर्व की भांति दोनों मित्र मिलते और एक दूसरे के सुख-दुख में मदद करते.

सीख:-- सच्चा मित्र वही जो विपत्ति में अपने मित्र के काम आए.

संतोष कौशिक जी द्वारा पूरी की गई कहानी

चंदन अपने पुराने गांव में पहुंचकर अपने दोस्त गुलाब के यहां गया. वहां देखा तो गुलाब की बूढ़ी मां व उसकी पत्नी की स्थिति बहुत ही खराब थी. वे दोनों भूखे प्यासे गुलाब के राह देख रहे थे. तभी चंदन उसकी पत्नी और मां से पूछता है कि-"गुलाब कहां है?" गुलाब के बारे में पूरी घटना बताते हुए उसकी मां कहती है कि- "गुलाब को शेर सिंह नाम का एक शराबी बहुत परेशान करता था. वह गांव के सभी सीधे-साधे व्यक्तियों से पैसे मांगता है, नहीं देने पर मारपीट करते हुए उसे षड्यंत्र कर फंसा देता है. उसने गुलाब से भी पैसा मांगा, नहीं देने पर मारपीट करते हुए जालसाजी कर जेल भिजवा दिया है. उसके खिलाफ कोई गवाही नहीं देता,गवाही देने वाले को बहुत परेशान करता है."

चंदन भैया आप ही कुछ करिए हमारा गुलाब निर्दोष है. चंदन ने उन लोगों को सांत्वना दी दुकान जा कर उन लोगों के लिए किराना सामान की व्यवस्था किया ताकि उन लोगों को सही समय पर भोजन मिले.

अब चंदन ने गुलाब के बारे में, गांव के व्यक्तियों से जानकारी ली. जानकारी से पता चला कि गुलाब निर्दोष है.

चंदन का एक दोस्त वकील था. उसने घटना के बारे में अपने दोस्त से चर्चा की और गुलाब को निर्दोष साबित करने के लिए सारे सबूत इकट्ठे किये. वकील एवं चंदन ने थाने में पहुंचकर थाना प्रभारी को पूरी घटना की जानकारी दी. पुलिस ने घटनाओं की पूरी तरह छानबीन की और गुलाब को निर्दोष पाया गया, उसे जेल से रिहा कर दिया गया. जेल से निकलते ही गुलाब अपने दोस्त चंदन से गले मिलते हुए कहता है कि- "मित्र तूमने मुझे निर्दोष साबित कर, विपत्ति में साथ देकर मित्रता का धर्म निभाया है तुम्हारा जैसा मित्र मुझे नहीं मिलेगा, मैं तुम्हे बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ"

इधर शराबी शेर सिंह को पुलिस ने सीधे-साधे व्यक्ति को फंसाने के जुर्म में जेल में बंद कर दिया. चंदन अपने दोस्त एवं पूरे परिवार को अपने गांव में रहने की

सलाह देते हुए घर ले गया. वहां दोनों दोस्त मिलकर काम करते हुए खुशी-खुशी से अपना जीवन बिताने लगे.

चन्दन कुमार बारीक (कक्षा आठवीं, शासकीय उच्च प्रा.शा.लांती) द्वारा पूरी की गई कहानी

चन्दन अपने पुराने गाँव जाते हुए यह सोचने लगा कि आखिर क्यों मेरा मित्र गुलाब मेरी चिट्ठियों का जबाब नहीं दे रहा है. यह सोचते हुए वह आगे बढ़ता चला गया चलते-चलते थक कर एक पेड़ के नीचे कुछ देर रुका. उसे पेड़ों की शीतल छाया में आराम महसूस हुआ. उसने पेड़ लगाने वाले को मन ही मन धन्यवाद दिया और सोचने लगा काश कि लोग रास्ते के किनारे-किनारे आपस में मिलकर छायादार पेड़ लगाते तो सफ़र का मजा कुछ और ही होता. उसने अपनी तरफ से अपने गाँव में दस पेड़ लगाने का संकल्प लिया. फिर उसने सामने देखा तो एक भला व्यक्ति दिखाई दिया जो उसे थका हुआ देखकर उसके पास ठहर गया था, उससे बातचीत हुई. उसने चंदन को अपनी मोटर साइकिल में बिठाकर उसके मंजिल वाले गाँव के समीप तक पहुंचा दिया. फिर चन्दन ने कहा - "भाई अब मुझे उतार दो मैं यहाँ से पैदल चला जाऊंगा" यह बोलकर उसे मदद हेतु धन्यवाद दिया.

वह गाँव में सीधे गुलाब के घर पहुंचा, जैसे ही चंदन ने गुलाब के घर में प्रवेश किया, उसकी नजर उस तस्वीर पर पड़ी जिसमें फूलों का हार लगा हुआ था यह तस्वीर किसी और की नहीं बल्कि उसके अपने जिगरी दोस्त गुलाब की ही थी. तस्वीर देखते ही चंदन भौंचक्का रह गया, उसे कुछ भी नहीं सूझा, उसने घर के भीतरी कक्ष तक प्रवेश करने की हिमाकत भी नहीं की. चन्दन को देखकर गुलाब की माँ ने बताया कि रविवार का दिन था. बेटा गाय चराने पहाड़ी की तरफ गया था उसे पहाड़ी पर सांप ने डस लिया वह दौड़ते-हांफते घर आया हमने गाँव के बैगा को बुलाकर झाड़-फूंक कराया पर सही ईलाज नहीं हो पाने के कारण उसकी मौत हो गई और गुलाब हम सब को छोड़कर सदा के लिए चला गया. चंदन ने माताजी से पूछा - आपने मेरे मित्र को पास के अस्पताल में क्यों नहीं पहुँचाया ? काश! आप लोग गुलाब को वक्त रहते अस्पताल ले जाते तो उसका सही इलाज होता और वह आज हम सबके साथ होता. गुलाब के दादा और माँ ने सिसकते हुए कहा- हाँ बेटा ! तुमने सही कहा, काश! हम समय रहते उसे डॉक्टर के पास

ले जाते तो यह दिन देखना नहीं पड़ता. माताजी ने चंदन को गोद में ले लिया और कहा -“आज से तुम ही हमारे बेटे हो” हमने तो अपने आँखों के तारे को अंधविश्वास में खो दिया मगर हमारे जैसी भूल कोई और ना करे इसके लिए लोगों को जागरूक करने की जरुरत है. फिर चंदन को माँ ने खूब खिलाया-पिलाया, दुलार किया और मिठाई भी बनाई और उसे उसके गाँव छोड़ने पूरे परिवार संग गई. इस तरह दोनों परिवार की मित्रता फिर से अटूट विश्वास में बदल गयी और चंदन को भी उसकी चिट्ठियों के जबाब नही आने के कारण का पता लग गया.

लक्ष्मी सोनी जी व्दारा पूरी की गई कहानी

चंदन अपने पुराने गांव की ओर निकल पड़ा. वह रास्ते भर गुलाब के बारे में सोचता जा रहा था. उसे गुलाब की चिंता सता रही थी कि वह ठीक होगा या नहीं? जैसे ही चंदन गाँव में पहुंचा, वहां का नज़ारा देख कर वह हैरान रह गया. गांव पूरी तरह से बदल चुका था. यह बदली तस्वीर बहुत भयानक थी. सभी लोग एक भयानक बीमारी से पीड़ित थे. चारों तरफ सिर्फ गंदगी ही फैली थी. चंदन गुलाब के घर गया. उसे देखकर गुलाब फूट-फूट कर रो पड़ा. उसके परिवार में सभी बीमार थे. गुलाब खुद बहुत कमजोर हो गया था. इस कारण वह चंदन को कोई पत्र नहीं लिख पा रहा था. चंदन और गुलाब मिलकर गांव को इस बीमारी से बचाने का उपाय सोचने लगे. उन्हें सफाई की बात याद आयी. उन्होंने गुलाब के घर से शुरुआत की. पूरा घर साफ किया. लोगों को जोड़ा और सफाई में लग गए. पूरी गली मोहल्ला को साफ किया और धीरे धीरे गांव साफ हो गया. गाँव की तस्वीर पहले जैसी हो गयी. लोग स्वस्थ होने लगे. गांव पहले जैसा साफ नजर आने लगा. सबने चंदन की खूब तारीफ की. लोगों ने कहा चंदन और गुलाब की दोस्ती वाकई काबिले तारीफ है.

सुशील राठौर जी द्वारा पूरी की गई कहानी

एक दिन वह अपने पिताजी से पूछ कर पुराने गांव की ओर चल पड़ा. वहां अपने मित्र गुलाब के घर गया. घर की स्थिति देखकर उसे बड़ा दुख हुआ. घर के सामान अस्त-व्यस्त पड़े थे, गुलाब की पत्नी की साड़ी, बच्चे की कमीज फटी हुई थी. बातचीत में गुलाब की पत्नी ने बताया कि आपके जाने के बाद ये बहुत अधिक उदास रहने लगे धीरे-धीरे इनकी दोस्ती गांव के कुछ गलत आदत वाले लोगों से हो गई. ये भी शराब एवं जुए के आदी हो गए. इन्हें भी शराब, जुए की लत लग गई. घर के सामानों को बेचने लगे. बातचीत के दौरान चंदन को यह भी पता चला कि भाभी के गहने जेवर भी बेच दिए गए यहां तक की खेतों को गिरवी रख दिया. भाभी एवं बच्चे से यह सब बातें जानकर चंदन पर तो मानो पहाड़ ही टूट पड़ा. चंदन अपने दोस्त की खोज में गली की ओर निकल गया. रास्ते में ही गुलाब मिल गया. गुलाब अपने मित्र चंदन को देखकर थोड़ा खुश तो हुआ लेकिन ग्लानि ज्यादा हुई. दोनों मित्र घर आए. घर में भाभी एवं गुलाब से आग्रह किया कि वह चंदन के साथ उसके नए गांव चलें बहुत मनाने के बाद वे सहमत हुए सब चंदन के साथ गांव आ गए यहां चंदन ने गुलाब का इलाज करवाया. गुलाब की गलत आदतों में सुधार आया. चंदन ने अपने मित्र से निवेदन किया कि वह भी अब इसी गांव में रहे. गुलाब अब पुराने गांव को छोड़कर नए गांव में नया मकान बनवा कर रहने लगे. चंदन और गुलाब फिर से एक साथ हो गए लोग उनकी मित्रता को सराहने लगे. गुलाब का परिवार अब खुशी-खुशी जिंदगी बसर करने लगा.

सुचि श्रीवास, कक्षा नवमी के द्वारा पूरी की गई कहानी

चंदन गांव पहुंचते ही अपने मित्र के घर गया उसने देखा कि उसका प्रिय मित्र बीमार है. चंदन ने पूछा की मित्र यह तुम्हें क्या हुआ? तुम चिट्ठियां लिखना क्यों बंद कर दिये और इतने दिनों से खबर क्यों नहीं भिजवाई कि तुम बीमार हो. तुमने मुझे इस लायक भी नहीं समझा. गुलाब ने कहा प्रिय मित्र चंदन मैं तुम्हारे सभी सवालों का जवाब देता हूं, जब तुम इस गांव को छोड़ कर गये उसके बाद तुम्हारी चिट्टियां हमेशा आती थीं पर कुछ दिन बाद मेरी तबीयत खराब होने लगी मैं टाइफाईड से पीड़ित था जिसके कारण मैं तुम्हें चिट्ठी नहीं भेज पाया और ना ही कोई सूचना. तुम तो जानते हो किस वजह से मैं खबर नहीं पहुंचा सका. जब से कुछ ठीक हुआ हूँ मै रोज तुम्हारी चिट्ठीयों को पढ़ता हूँ, यही मुझे सबल प्रदान करता है. मैओं मन ही मन तुम्हें पुकारता हूँ देखा, तुम आज आ गए. मुझे तो जैसे भगवान से सब कुछ मिल गया, धन्यवाद प्रभु! गुलाब ने कहा, मित्र दो-चार दिन मेरे घर मेरे साथ रहते तो मुझे अच्छा लगता. उसके बाद तुम अपने घर चले जाना. चंदन कहता है, मेरी कुछ ही दिनों बाद परीक्षा है. उसके बाद तुम्हारे घर भी आऊंगा और चिट्ठियां भी लिखकर भेजता रहूंगा मुझे अब तसल्ली हो गई है कि तुम्हारी चिट्ठी मुझे क्यों नहीं आ रही थी. मैं चिट्ठी नहीं आने से बहुत दुखी हो गया था. मेरा किसी कार्य में मन नहीं लगता था. सोच रहा था पता नहीं क्यों मेरा मित्र मुझसे नाराज हो गया अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि मेरा मित्र दूर तो रह सकता है पर मुझसे जुदा नहीं. मैं हर दिन तुम्हें याद करता हूँ और मुझे पता है तुम भी मुझे याद करते रहोगे.

टेकराम ध्रुव दिनेश जी द्वारा पूरी की गई कहानी

चंदन जब अपने पुराने गांव पहुंचा तो उसे पता चला कि गुलाब का एक्सीडेंट हो गया है, एक पैर टूट गया है. प्लास्टर लगा होने के कारण वह चलने मे असमर्थ है. ठीक होने में महीनों लगेगा.

चंदन तुरंत गुलाब के पास गया और बोला- मित्र तुम्हारी ऐसी हालत हो गई, और मुझे खबर तक नहीं की. गुलाब ने कहा - ऐसी बात नहीं है मित्र मैंने तुम्हें लिखा था, लेकिन चल न पाने के कारण उसे भेजने में असमर्थ था. मैं पत्र पोस्ट करने के लिए कुंदन को दे देता था. कई सारे पत्र मैं कुंदन के माध्यम से पोस्ट कर चुका हूं. लेकिन तुम्हारी ओर से भी कोई जवाब अभी तक नहीं आया. तब चंदन ने कहा- ये कैसी बातें कर रहे हो मित्र, मुझे तुम्हारा एक भी पत्र अभी तक नहीं मिला है, जबकि मैं भी तुम्हें ढेर सारे पत्र भेज चुका हूँ. लेकिन तुम्हारी ओर से कोई जवाब न आते देख मैं परेशान हो गया और तुमसे मिलने चला आया.

उधर कुंदन को पता चला कि चंदन, गुलाब से मिलने आया है तो वह सोच में पड़ गया क्योंकि, कुंदन उन लोगों में से था जो चंदन ओर गुलाब की मित्रता से ईर्ष्या करता था. वह सोचता था कि इनकी मित्रता कैसे टूटे. ओर ये अच्छा मौका जो उसे मिल गया था, चंदन और गुलाब की मित्रता को तोड़ने का इसलिए कुंदन, चंदन के नाम गुलाब का और चंदन का गुलाब के नाम के पत्रों को पहुंचने ही नहीं दे रहा था.

दोनों को एक साथ देखकर उसे आत्मग्लानि हुई और सोचने लगा कि चंदन और गुलाब मेरे बारे में न जाने क्या-क्या सोचेंगे, मैं उनकी मित्रता में फूट डालने के लिए ये क्या कर रहा था. उससे रहा न गया और वह उनसे क्षमा मांगने गुलाब के घर पहुंच गया.

कुंदन को आया देख गुलाब ने कहा-बड़ी लम्बी उम्र है तुम्हारी, सही वक्त में आए हो, मैं तुम्हें बुलाने ही वाला था. तुम मेरे मित्र चंदन को बताओ कि मैंने कितने सारे पत्र उसके नाम भेजने को तुम्हें दिया था. लेकिन चंदन कह रहा है कि उसे मेरा एक भी पत्र नहीं मिला और न ही उसके द्वारा लिखा पत्र मुझे मिला. कुंदन ने कहा- मैं तुम दोनों का गुनहगार हूं मित्र, मैं नहीं चाहता था कि तुम

दोनों फिर से मिलो. इसलिए तुम दोनों के पत्र को एक दूसरे तक नहीं पहुंचने दे रहा था. आज चंदन को यहां देख कर तुम दोनों के बीच मित्रता की ताकत का पता चला, मुझे मालूम नहीं था कि चंदन का तुम्हारे प्रति इतना प्यार उसे यहां तक खींच लायेगा. मैं अपने किए पर शर्मिंदा हूं, मुझे माफ कर दो, आगे से ऐसा नहीं होगा.

गुलाब ने कहा- मित्र, सुबह का भूला शाम को घर वापस आ जाए उसे भुला नहीं कहते, हमारे दिल में तुम्हारे लिए कोई शिकायत नहीं. अगर तुम ऐसा नहीं करते तो क्या मेरा मित्र मुझसे मिलने आ पाता. कुंदन ने कहा- मुझे और शर्मिंदा न करो मित्र. तब चंदन ने कहा-

तो इसी बात पर मिलाओ हाथ, आज के बाद अब हम तीनों का रहेगा साथ.

इस तरह चंदन और गुलाब की मित्रता और निखरकर कुंदन बन गयी.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

<u>सोना की होशियारी</u>

एक हिरण शावक था, सोना. सोने जैसा रंग, बड़ी- बड़ी आंखें, बहुत फुर्तीला पर भोला सा. जब कुलांचें मारता हुआ दौड़ता तो कोई उसकी बराबरी न कर पाता.

सोना अपने झुंड के साथ जंगल से लगे घास के बहुत बड़े मैदान में रहता था. उसके दिन बड़ी मस्ती में बीत रहे थे.

जंगल में रहता था एक सियार भुरु, बहुत धूर्त और चालाक. एक दिन इसकी नज़र सोना पर पड़ी. उसके नन्हे और कोमल शरीर को देखते ही उसके मुंह से लार टपकने लगी. सोचा, चलो आज उसका पीछा किया जाए. पर थोड़ी ही देर में उसे समझ में आ गया कि सोना को पकड़ना उसके बस की बात नहीं.

मुंह लटकाए वह अपनी मांद में लौट आया. पर सोना की छवि उसकी आंखों से हट नहीं रही थी. वह रात भर तिकड़में भिड़ाता रहा. सुबह होते ही वह कबरा तेंदुए के पास पहुंचा और सोना के बारे में उसे बताया. कबरा के मुंह में भी पानी आ गया. उसने भुरु से कहा, "भुरु, मैं उसे दौड़कर तो पकड़ नहीं पाऊंगा. हां, अगर तुम उसे किसी तरह बहला - फुसलाकर जंगल में ले आओ तो बात बन जाएगी. "मैं किसी पेड़ पर छुपा बैठा रहूंगा. जैसे ही वह पास आएगा मैं कूदकर उसे दबोच लूंगा."

फिर एक दिन भुरु सोना से मिला और प्यार का नाटक करते हुए उससे कहा, "कैसे हो प्यारे भांजे! "

सोना इस नए मामा को देखकर पहले तो चौंका पर धीरे-धीरे उसकी बातों में आ गया. फिर वही हुआ जिसका डर था. वह भुरु के साथ जंगल की ओर चल पड़ा.

(इसके बाद क्या हुआ, यह आप हमें लिख कर भेजें. आपकी कहानी हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे)

अंतर ढूँढो

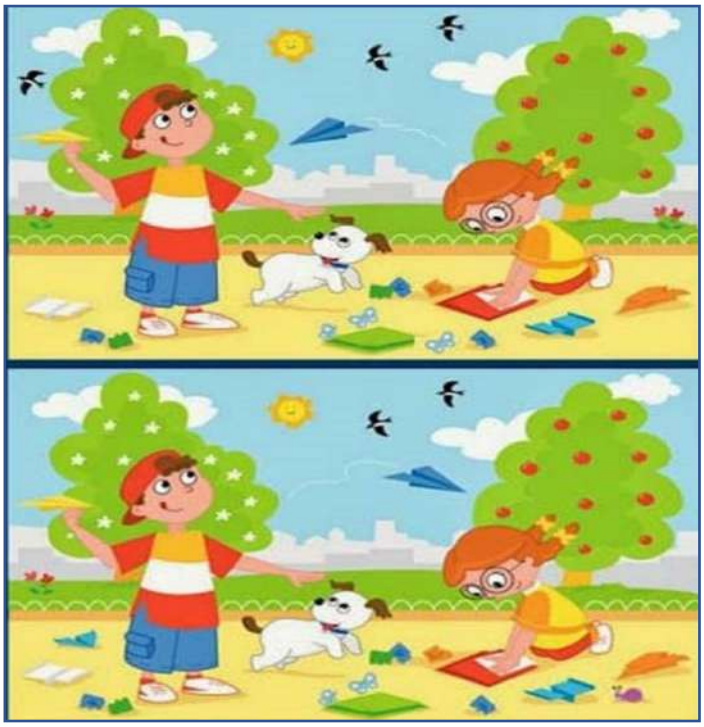

<u>शिवरात्रि मनाबो --- महादेव में पानी चढाबो</u>

रचनाकार:- महेन्द्र देवांगन "माटी"

शंकर भगवान ल औघड़ दानी कहे गेहे. काबर पूजा पाठ करे के सबले सरल विधि एकरे हे. अऊ बहुत जल्दी खुश होके वरदान भी देथे. शंकर भगवान ल भोला कहिथे त सीरतोन में भोलेच भंडारी हरे.

शिवरात्रि के दिन एकर बिसेस पूजा पाठ करे जाथे. फागुन महीना में अंधियारी पांख के चौदस के दिन शिवरात्रि ल मनाय जाथे.

कहे जाथे की इही दिन शिव जी ह तांडव करके अपन तीसरा आंखी ल खोले रिहिसे अऊ पूरा ब्रमहांड ल समाप्त कर दे रिहिसे. एकरे पाय ए दिन ल महाशिवरात्रि या कालरात्री भी कहे जाथे.

कोई कोई काहनी में माने जाथे के भगवान शंकर के बिहाव ह इही दिन होइस हे

शंकर भगवान के रुप ह निराला रहिथे. अपन हाथ गोड़ में राख ल पाऊडर बरोबर चुपरे रहिथे. गला में नाग सांप के माला, कान में बिच्छी के कुंडल, कनिहा में बघवा के छाला अऊ नंदी बैला के सवारी रहिथे.

शिव जी ह अपन भक्त मन उपर जल्दी खुश हो जथे अऊ तुरते वरदान देथे.

पौरानिक कथा ----- एक बार एक शिकारी ह शिकार करे बर जंगल में जाथे. शिकार करत करत वोला रात हो जथे अऊ रसता भटक जाथे. त वोहा अराम करे बर एक ठन बेल के पेड़ में चढ़ जथे. वो शिकारी ह रात भर जागत जागत बेल पत्ता ल टोर टोर के खाल्हे में फेंकत जाय. पेड़ के खाल्हे में एक ठन शिवलिंग रखाय रिहिसे. बेल के पत्ता ह उही शिवलिंग में गिरत रिहिसे. वो दिन शिवरात्रि रिहिसे. एकर से शिव जी ह भारी खुश होगे अऊ शिकारी के कलियान बर वरदान दीस.

एक अऊ कथा में आथे की

एक मंदिर में सोना के घंटी बंधाय रहिथे. रात में एक झन चोर ह चोरी करे बर जाथे. वो घंटी ल निकालना चाहथे लेकिन ओकर हाथ ह घंटी तक अमरात नइ राहे. तब वोहा शिवलिंग के उपर चढ़गे अऊ घंटी ल निकाले लागीस. शिवलिंग उपर चढ़ीस त शंकर भगवान परगट होगे अऊ वरदान मांगे बर बोलीस. तब वो चोर डररा जथे अऊ बोलथे के मेंहा तो तोर पूजा पाठ कुछु नइ करे हों भगवान, अऊ मोर ऊपर कइसे खुस होगेस. तब भगवान बोलथे के सब आदमी आथे अऊ मोर ऊपर फूल पान नरियर भर चढ़हाथे, लेकिन तेंहा तो अपन पूरा शरीर ल चढ़हा देस। एकर से मेंहा बहुत खुश हावँव.

अइसे बोल के वोहा चोर ल वरदान दीस अऊ चोर के गरीबी दूर होगे.

ए परकार से शंकर भगवान ह जल्दी खुश होके वरदान देवइया हरे.

शिवरात्रि के दिन जेहा भी सच्चे मन से पूजा पाठ करथे ओकर मनोकामना जरुर पूरा होथे.

ॐ नम: शिवाय

मेरा परिवार

मेरी नानी, बड़ी सयानी
सुनाती हैं, एक से एक कहानी

मेरी मम्मी बड़ी निपुण
बतलाती है, गणित के गुण

मेरे पापा के मीठे बोल
मुझे कहते हैं तू अनमोल

मेरा भाई दिखे है भीम
कोई मुझसे लड़े तो दिखा दे जिम

मेरी बुआ देती है दुआ
मुझे खिलाती है मालपुआ

मेरे नाना खाते खाना
कुछ लेने पूछो तो हो जाते रवाना

मेरे दादा करे दुलार
देते आशीर्वाद बार बार

चल संगवारी स्कूल जाबो

रचनाकार - अनूप कुमार पंडा

चल संगवारी स्कूल जाबो, साक्षर भारत हम बनाबो.
बड़े बिहनिया उठबो हमन, खेलबोन पढ़बोन लिखबो हमन.
अँधियारी हर दूर पराही,अंजोरी हर कऊखन आही.
पुस्तक बस्ता धर के हमन,सुग्घर गढ़बोन अपन जीवन।.
चल संगवारी स्कूल जाबो, साक्षर भारत हम बनाबो
बासी खा के स्कूल जाबोन, चऊमीन मैगी दूर भगाबोन.
बन ठन के हम स्कूल जाबोन, गुरु के आशीष हमन पाबोन.
चल संगवारी स्कूल जाबो,साक्षर भारत हम बनाबो.
डोगरी पहार हम चढ़ के जाबो,तब्भे तो हम नाम कमाबो.
नवा नवा हम अक्षर पढ़बो,अक्षर ले जिनगी गढ़बो.
गुरुजी ले हम पाबोन ज्ञान,तब्भे बनही देश महान.
चल संगवारी स्कूल जाबो, साक्षर भारत हम बनाबो.

मातृभाषा के संरक्षण का दिन

प्रेषक - प्रमोद दीक्षित “मलय”

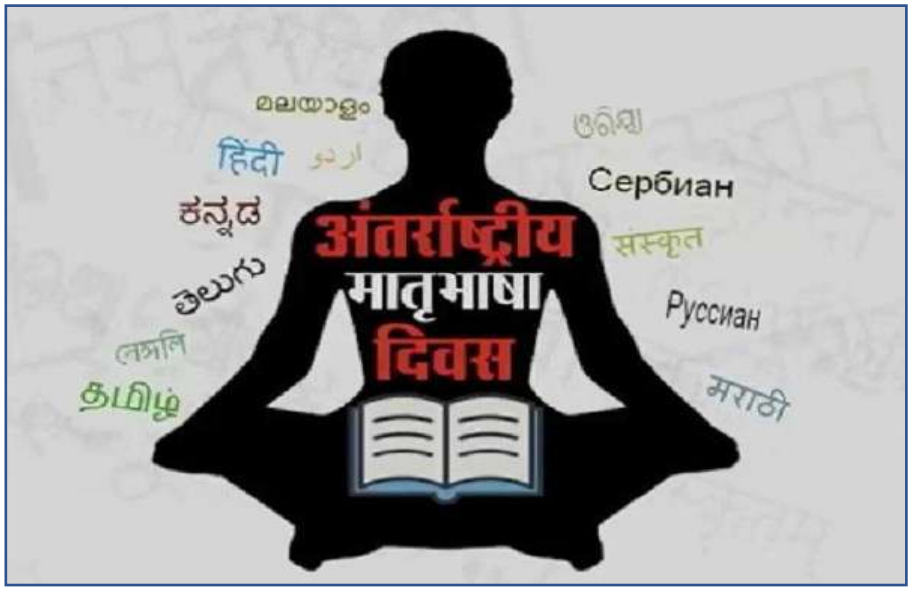

मातृभाषा मानव जीवन में आनन्द का उत्स है, लोक का अप्रतिम प्रसाद है और अवसाद से मुक्ति का द्वार भी. यह कुछ नया रचने-गुनने और चिंतन-मनन करने की आधारभूमि है. मातृभाषा है तो जीवन में उमंग, उत्साह की उत्ताल तरंगें हैं. वास्तव में मातृभाषा स्वयं की सहज अभिव्यक्ति और कल्पना के इंद्रधनुषी रंगों को साकार करने का एक फलक है. मातृभाषा में कड़ाही में गुड़ बनाने के लिए पक रहे गन्ने के रस की सोंधी सुगंध और मिठास होती है. मातृभाषा में किसी पहाड़ी झरने की मोहक ध्वनि सा सरस सुमधुर संगीत और गत्यात्मकता होती है. वह नित नये शब्द बुनती नवल रूप ग्रहण करती है. वह जीवन का स्पन्दन हैं, प्राण हैं. कोई व्यक्ति भले ही कितने बढ़े पद पर पहुंच जाये पर हर्ष, दुःख, प्रेम और क्रोध के अत्यधिक आवेग में उसके कंठ से सहसा मातृभाषा का स्वर ही फूटता है. यह मातृभाषा की जीवन्तता और जीवन में बसाहट का घोतक है. तभी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को कहना पड़ा - “निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल. बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल.”

मातृभाषा के सम्बंध में अभी भी स्पष्ट परिभाषा का अभाव दिखता है. मातृभाषा से आशय किसी बच्चे को उसकी माता से प्राप्त होने वाली भाषा के अर्थ में किया जाता है. लेकिन यह मातृभाषा के व्यापक फलक को सीमित और संकुचित कर देना है. मेरे मत में मातृभाषा किसी व्यक्ति के बचपन में उसके परिवेश में कार्य-व्यवहार की वह सामान्य भाषा है जिसमें उसने लोक से सम्पर्क एवं संवाद किया है, भले ही वह उसकी मां की भाषा से अलग रही हो. तो हम कह सकते हैं की मातृभाषा किसी व्यक्ति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान होती है. मातृभाषा का स्थान वास्तव में कोई दूसरी भाषा कभी भी नहीं ले सकती. इसलिए मातृभाषा को न केवल संरक्षित रखना बल्कि सवंर्धित करते हुए अगली पीढ़ी को सौपना हमारी सामाजिक, भाषाई नैतिक जिम्मेदारी है. इस दृष्टि से यूनेस्को द्वारा विश्व भर में 21 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है.

भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताएं एवं बहुभाषावाद के बारे में वैश्विक जन-जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्रसंघ की संस्था यूनेस्को द्वारा प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है. अगर इस दिवस का ऐतिहासिक संदर्भ देखें तो अपनी मातृभाषा के लिए प्राणों का उत्सर्ग कर देने की प्रेरक घटना समृति पटल पर उभरती है. वास्तव में मातृभाषा दिवस को बांग्लादेशी विद्यार्थियों की अपनी भाषा की रक्षा के लिए छठे दशक के मध्य में पाकिस्तानी सरकार के विरुद्ध हुए संघर्ष में विजय के उत्सव के रूप में देखा जाना चाहिए, जिन्होंने पाकिस्तान द्वारा 1948 में उर्दू को राष्ट्रभाषा बनाकर पूर्वी पाकिस्तान के बांग्लाभाषी आम जनता पर थोपने के कुत्सित बलात् प्रयास के विरुद्ध अपनी मातृभाषा बांग्ला के अस्तित्व की लड़ाई में उठ खड़े हुए आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. तत्कालीन पाकिस्तानी सरकार ने ढाका विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के इस भाषाई आंदोलन को बर्बरतापूर्वक कुचलने के लिए विद्यार्थियों के ऊपर पुलिस द्वारा गोली चलवाई थी, जिसमें कुछ विद्यार्थी मारे गए, सैकड़ों लापता हुए. अमानवीय काले इतिहास की वह तारीख 21 फरवरी थी. तो विद्यार्थियों के इस अतुल्य बलिदान की स्मृति में सम्पूर्ण बांग्ला देश (तब पूर्वी पाकिस्तान) में प्रतिवर्ष

21 फरवरी को अपनी मातृभाषा बांग्ला को राजकीय आधिकारिक दर्जा देने की मांग के साथ छोटे-बड़े हजारों कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं. आखिरकार 29 फरवरी 1956 को पाकिस्तानी सरकार ने बांग्ला भाषा को दूसरी आधिकारिक राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान कर दिया. तब से 21 फरवरी को प्रति वर्ष बांग्लादेशी मातृभाषा दिवस का आयोजन करते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ से मांग करते रहे हैं कि 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मान्यता प्रदान की जाये. उनकी इस मांग के आधार मातृभाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के महत्व को स्वीकारते हुए यूनेस्को ने 17 नवंबर 1999 को इसकी स्वीकृति देते हुए वर्ष 2000 से इस दिवस को सम्पूर्ण विश्व में मनाने की घोषणा की. और तब से आधिकारिक रूप से राष्ट्रसंघ से जुड़े सभी देशों में यह दिवस अपनी मातृभाषा-बोली को स्मरण करने, बचाये रखने एवं अगली पीढ़ी तक पहुंचाये जाने के महतवपूर्ण अवसर के रूप में मनाया जाता है. उल्लेखनीय है कि 21 फरवरी को बांग्लादेश में राष्ट्रीय अवकाश घोषित है.

पर वर्तमान समय मातृभाषा-बोलियों पर संकट का है. दैनंदिन जीवन में बढ़ते तकनीकी उपकरणों के व्यामोह, आर्थिक सुदृढता के लिए पलायन करने, मुट्ठी में सिमटती-समाती दुनिया के कारण दैनिक कार्य व्यवहार में मातृभाषा के प्रयोग के अवसर बहुत सीमित हुए है. एक शोध-सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में बोले जाने वाली लगभग 6900 भाषा-बोलियों में से 3000 भाषाएं मरणासन्न हैं. लगभग प्रतिदिन एक बोली मरने को विवश है. विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाएं केवल 10 हैं जिनमें जापानी, रूसी, बांग्ला, पुर्तगाली, हिंदी, अरबी, पंजाबी, मंदारिन और स्पेनिश सम्मिलित है. विश्व की कुल आबादी का 60 प्रतिशत केवल 30 प्रमुख भाषा में अपना कार्य व्यवहार संपादित करता है. आने वाले तीन-चार दशकों में विश्व की 5000 से अधिक भाषाएं खत्म होने के कगार पर हैं. भारत का संदर्भ लें तो 1961 की जनगणना में भारत में 1652 भाषाएं थीं जो अब 1300 के करीब शेष बची हैं और आगामी जनगणना में यह आंकड़ा और नीचे जायेगा, ऐसा माना जा सकता है. भारत में 30 भाषाएं ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या 10 लाख के आसपास ही है. 7 भाषाएं ऐसी कि जिनके जानकार एक लाख से

ज्यादा नहीं है. 122 भाषाएं ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या केवल दस हजार ही बची है. कुछ भाषा-बोली, विशेषरूप से जनजातीय समाज. के व्यवहार करने वाले तो केवल अंगुलियों में गिने जा सकते हैं. मातृभाषा रोजगारोन्मुख न होने के कारण गैरयूरोपीय देशों की बड़ी आबादी अंग्रेजी सीख रही है. जो रोजगार का द्वार तो खोल रही है पर अपनी जड़ों से काट रही है.। महात्मा गांधी मातृभाषा की पैरवी करते हुए बच्चों या व्यक्तियों को अंग्रेजी सिखाने के प्रयासों को गुलाम मनोवृत्ति का पोषक मानते थे. बच्चों के सीखने में विदेशी भाषा का माध्यम उनमें अनावश्यक दबाव, रटने एवं नकल करने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है. वह उसकी मौलिकता का हरण कर लेता है. यूरोप में हुए एक शोध से यह तथ्य सामने आया कि जो बच्चे स्कूलों में अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं और घरों पर मातृभाषा का प्रयोग करते हैं वे दूसरे बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान और मेधावी होते हैं. भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा था कि मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बन सका क्योंकि गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की थी.

तो संयुक्त राष्ट्रसंघ ने व्यक्ति के विकास में मात्भाषा की भूमिका स्वीकारते हुए 2008 को अंतरराष्ट्रीय भाषा वर्ष घोषित किया. गतवर्ष के आयोजन के थीम विषय 'विकास, शांति और संधि में देशज भाषाओं की भूमिका' से इस दिवस की गम्भीरता स्पष्ट है. विश्व के कई देशों ने स्मारक बनाकर मातृभाषा के महत्व को रेखांकित किया है. जिनमें सिडनी स्थित 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस स्मारक' एवं ढाका 'शहीद स्मारक मीनार' प्रेरक एवं उल्लेखनीय है. वास्तव में यह दिवस अपनी मातृभाषा और बोली के सहेजने-संवारने और दैनंदिन जीवन में अधिकाधिक व्यवहार करने के संकल्प का दिन है.

रास्ता ढूँढो

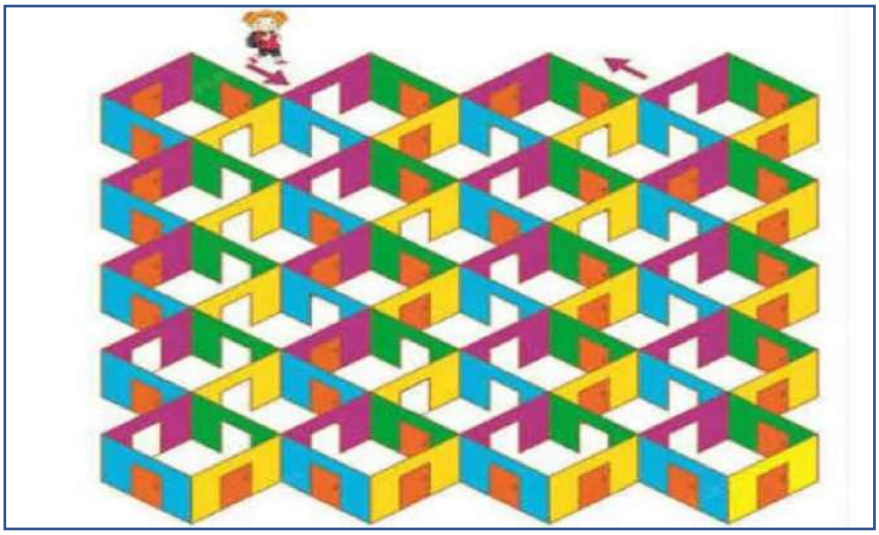

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कहानियाँ प्राप्त हुई हैं, जो हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

मतदाता दिवस

लेखक- संतोष कुमार कौशिक

(शिक्षक अपने मतदाता परिचय कार्ड को लेकर कक्षा में प्रवेश करते हैं और वह छात्रों से कार्ड को दिखाकर प्रश्न करते हैं)

अध्यापक-- हे छात्र! मेरे दाहिने हाथ में क्या है?

छात्र-- माननीय गुरुजी आप के दाहिने हाथ में परिचय कार्ड है.

अध्यापक-- ठीक है, इस परिचय कार्ड को मतदाता फोटो पहचान पत्र कहते हैं. यह कार्ड आधार कार्ड से अलग है. जिसकी आयु 18 वर्ष यह अधिक उम्र की हो जाती है. जिसे मतदान करने का अधिकार होता है. उसका मतदाता परिचय कार्ड प्राप्त होता है.

छात्रा-- गुरुजी गत माह मतदाता जागरूकता रैली शाला में निकाली गई थी. मतदाता दिवस कब और क्यों मनाते हैं उसके बारे में समझाइए.

अध्यापक-- बहुत सुंदर, आज हम मतदाता दिवस के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे.

मतदाता दिवस 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के ठीक एक दिन पहले 25 जनवरी को मनाया जाता है. 26 जनवरी 1950 को देश में पहला गणतंत्र दिवस मनाया था. क्या आप जानते हैं कि भारतीय संविधान की बनने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन समय लगा था. मतदाता दिवस भारतीय लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण दिन है. इस दिन का उद्देश्य युवा भारतीय मतदाताओं को लोकतांत्रिक, राजनैतिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना है. भारत में जितने भी चुनाव होते हैं उनके निष्पक्षता से संपन्न कराने की जिम्मेदारी भारत निर्वाचन आयोग की होती है. भारत निर्वाचन आयोग का गठन भारतीय संविधान के लागू होने के ठीक एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को हुआ था क्योंकि एक दिन बाद 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतांत्रिक देश बनने वाला था और भारत में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से चुनाव करने के लिए निर्वाचन आयोग का गठन जरूरी

था इसलिए 25 जनवरी 1950 को भारत निर्वाचन आयोग का गठन हुआ भारत सरकार ने वर्ष 2011 से हर चुनाव में लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए निर्वाचन आयोग की स्थापना दिवस 25 जनवरी को ही राष्ट्र मतदाता दिवस मनाने के रूप में शुरुआत की थी और 2011 से ही हर साल 25 जनवरी को ही राष्ट्र दिवस मनाया जाता है. इस साल हम 9वां राष्ट्र मतदाता दिवस मनाया गया है.

छात्र-- गुरुदेव क्या हम लोग भी वोट डाल सकते हैं और डालने के लिए क्या उम्र होनी चाहिए.

अध्यापक--- नहीं बच्चों, आप लोगों का उम्र जब तक 18 वर्ष नहीं हो जाता वोट नहीं डाल सकते. क्या आपको पता है पहले मतदाता की पात्र आयु 21 वर्ष थी लेकिन 1998 में 18 वर्ष घटा दिया था. इस बदलाव को शामिल किया गया क्योंकि दुनिया भर कई देशों में अधिकारिक मतदाता का उम्र के रूप में 18 वर्ष की सीमा को अपनाया था. उसी समय भारतीय युवा साक्षर राजनैतिक रूप से जागरूक हो रहा था 61वें विधेयक संशोधन 1998 में भारत के मतदाता की पात्रता उम्र कम कर दिया. अतः हम कह सकते हैं कि जिसकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक हो वह वोट डाल सकते हैं.

छात्र-- मेरे पड़ोस में कुछ व्यक्ति चर्चा कर रहे थे कि हमारे एक वोट से क्या फर्क पड़ेगा. जीत हार तो होगा ही, ऐसा सोच कर वोट डालने नहीं जाते. उसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

अध्यापक--अच्छा प्रश्न है, भारत के प्रत्येक नागरिक को मतदान प्रक्रिया में भागीदारी जरूरी है क्योंकि आम आदमी का एक वोट ही सरकार बदल देता है हम सब का एक वोट ही पल भर में एक अच्छी सरकार प्रतिनिधि भी चुन सकता है. और एक बेकार सरकार प्रतिनिधि भी चुन सकता है इसलिए भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने मत का प्रयोग सोच समझ कर करना चाहिए.

छात्र-- गुरुदेव आसपास में देखते हैं कि वोट के बदले पैसा, कपड़ा, कुछ नशा सामान आदि लुभाने वाली वस्तुओं को देकर वोट खरीदा जाता है उसके लिए क्या करना चाहिए?

अध्यापक-- सत्य बात है, अपने मत का प्रयोग कोई भी लुभाने वाले वस्तुओं में नहीं देना चाहिए क्योंकि उसमें क्षण मात्र की सुख है हमें उसके बाद 5 वर्ष तक उसका फल भुगतना पड़ेगा आप सब कल के नागरिक बनोगे इसलिए आप मेरी बात ध्यान से सुनो. भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने मत का प्रयोग सोच समझ कर करना चाहिए पर ऐसी सरकार या प्रतिनिधि चुनने के लिए करनी चाहिए जो देश के तरक्की और विकास के पद पर ले जा सके. भारत देश की 65% आबादी युवाओं की है इसलिए देश की प्रत्येक चुनाव में युवाओं की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा करनी चाहिए ऐसी सरकार चुननी चाहिए जो कि सम्प्रदायिकता व जातिवाद से ऊपर उठकर देश के विकास के बारे में सोचें. जिस देश के युवा जाग जाएगा उस देश में जातिवाद ऊंच-नीच सम्प्रदायिक भेदभाव खत्म हो जाएगा ये सिर्फ और सिर्फ हो सकता है हम सबके मतदान करने से.

हम हर साल मतदाता दिवस मनाएंगे और शपथ लेंगे. जिनकी उम्र इस वर्ष 18 वर्ष पूरी हो रही है वह सभी होने वाले मतदान में जरूर वोट दें. मुझे भरोसा है कि आप सभी इस जानकारी को अपने भविष्य में उतारेंगे. साथ ही अपने घर,अपने पड़ोस में इसका प्रचार-प्रसार करेंगे.

(शिक्षक अंत में- मतदान कैसे करते हैं उस सभी प्रक्रिया को समझाते हुए विद्यालय में नकली मत पेटी बनाकर विद्यालय के छात्रों द्वारा रोलप्ले कराते हुए बारी बारी से बच्चों द्वारा मतदान कराया जाता है.)

शिक्षा-- मतदान दिवस कब और क्यों मनाते हैं, एक वोट का क्या महत्व है उसके बारे में बच्चों को जानकारी प्राप्त होगा. अपने भावी जीवन में मतदान करने का तरीका और सही प्रतिनिधि का चयन का समझ विकसित होगा.

जिम्मेदारी

लेखक- इंद्रभान सिंह कंवर

हर बार की तरह गुरु जी इस बार भी शाला के सभी कक्षाओं के उत्कृष्ट विद्यार्थियों को शाला के दायित्व का भार सौपने वाले थे. मगर गुरुजी को उड़ती हुई खबर पता चली थी कि कक्षा के कुछ अन्य विद्यार्थी भी इस जिम्मेदारी को लेकर अपनी कुशलता का परिचय देने को तैयार हैं और वे सभी गुरुजी के सामने सालों से चली आ रही इस परंपरा का विरोध नहीं कर पा रहे हैं. जब यह बात गुरुजी को पता लगी तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए.

उन्होंने अगले ही शनिवार को होने वाली बाल सभा में इसकी घोषणा की, कि इस बार हम शाला के दायित्वों का भार शाला में निर्वाचन के माध्यम से चयनित विद्यार्थियों को ही देंगे और पुरानी परंपरा को खत्म करेंगे. सर्वप्रथम तो जब सब बच्चों ने इस घोषणा को सुना तो उन्हें अजीब-सा लगा मगर राजू, बाला, सोनू और सैफ तथा उनके मित्रों को जो चाहते थे कि इस बार वे भी शाला की जिम्मेदारी लें, उनके मन में खुशी की लहर दौड़ गई. उन्होंने मन में ठान लिया कि इस बार हम भी विद्यालय की सेवा कर सभी का दिल जीत पाएंगे. फिर क्या था गुरु जी ने सभी को निर्वाचन की रूपरेखा समझाई और कहा कि जो भी विद्यार्थी जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं वे अपनी कक्षा शिक्षक के पास अपना नाम दर्ज करा दें.

अगले दिन चुनाव कार्य कराकर जिम्मेदार लोगों को उनके दायित्व सौंपे जाएंगे. आखिर वह दिन आ ही गया जब शाला में पहली बार चुनाव होने वाला था और इस बार शाला को नए जिम्मेदार चेहरे मिलने वाले थे जो अगले वर्ष तक शाला की जिम्मेदारी लेने वाले थे. चुनाव कार्य संपन्न हुआ और राजू बाला,शैफ तथा मोनू सभी अपने अपने पद के लिए विजयी घोषित हुए और अपना कार्यभार संभाला. उन्होंने अगले एक साल तक अपने कार्यों को जिम्मेदारी पूर्वक और आनंद पूर्वक किया. जिससे साला के वातावरण एवं उनके खुद के वातावरण में निखार आया. जिससे पूरा शाला परिवार खूब खुश हुआ और उन्हें बधाइयां दी.

सीख-जिम्मेदारी इंसान को बहुत कुछ सिखा देती है बस जरूरत है तो उन्हें एक मौका देने की

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे.

अन्तराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

प्रेषक - डॉ एम सुधीश

प्रतिवर्ष 21 फरवरी, 2020 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है. इस वर्ष हमारे लिए यह दिवस बहुत ही यादगार बन गया है क्योंकि हमारे राज्य में अब प्राथमिक शालाओं में शुरू की कक्षाओं में बच्चों को समझाने के लिए बच्चों के घर की भाषा का इस्तेमाल किया जाएगा. बच्चों के घर की भाषा में सिखाने के लिए शिक्षकों को भी बच्चों के घर की भाषा सीखनी होगी. क्या हम अपने पालकों एवं आसपास भाषा के जानकार लोगों को अपने शिक्षक को हमारी भाषा सिखाने में मदद करने के लिए निवेदन कर सकते हैं?

1. हमारी अपनी भाषा अच्छे से जानने वाले लोगों की सूची बनाकर अपने शिक्षक/ शिक्षिका को देना
2. हमारे बड़े भाई और बहनों को हमारी भाषा में शब्दकोश जैसा कुछ बनाने के लिए मदद लेना
3. हमारी भाषा में वर्णमाला चार्ट बनाने में सहयोग लेना
4. समुदाय से बड़े-बुजुर्गों को आमंत्रित कर बच्चों को इस सप्ताह में प्रतिदिन स्थानीय भाषा में कहानी सुनाना

5. मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध स्थानीय सामग्री का उपयोग कर प्रतिदिन स्थानीय सामग्री का वाचन
6. बड़ी कक्षाओं / स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़ी चित्र कहानी की पुस्तक तैयार कर वाचन
7. स्थानीय भाषा में गीत-कविताओं एवं विभिन लोक कलाओं से परिचय एवं स्थानीय कार्यक्रमों का आयोजन

हम सभी बच्चे, हमारे युवा एवं इको क्लब इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुए अपने शिक्षकों को हमारी भाषा सीखने में सहयोग प्रदान करेंगे. ऐसा यदि हम सभी प्राथमिक शालाओं में कर लेवें तो हमारे ऐसे साथी जिन्हें ठीक से समझ में नहीं आता, वे भी समझने लगेंगे

थोडा हंस लो जी

मोंटी (पहलवान से)- आप एक बार में कितने लोगों को उठा सकते हो.

पहलवान- 5 लोगों को

मोंटी- बस... आपसे ज़्यादा तो मेरा मुर्ग़ा ताक़तवर है वो रोक सुबह एक बाँग से पूरे मोहल्ले को जगा देता है.

संता-बंता को दो बम पड़े मिले. वे इन्हें ले कर पुलिस के पास जा रहे थे. अचानक बंता ने संता से पूछा

बंता- यार संता अगर कोई बम रास्ते में ही फट गया तो...???

संता- तो क्या पुलिस से झूठ कह देंगे कि एक ही बम मिला था

सोनू (शो रूम वाले से)- भैया उषा का कूलर है?

शोरूम वाला- हाँ है.

सोनू- तो दे दो उषा मँगा रही है ...

सौरभ- डॉक्टर अंकल कुछ रोज़ से मेरे सिर में दर्द हो रहा है.

डॉक्टर- अच्छा! 🤔तो सिटी स्कैन करना पड़ेगा.

सौरभ- डॉक्टर अंकल मुझ एक के लिए पूरे सिटी का स्कैन क्यों करोगे ....?😳

रोहन रोज़ रात को चीनी का डब्बा खोल कर देखता और सो जाता.

एक दिन उसकी पत्नी ने पूछा- ये तुम रोज़ रोज़ चीनी का डब्बा खोल कर क्या चेक करते हो.

रोहन - डॉक्टर ने मुझे रोज़ रात को सुगर चेक करने को कहा है.

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

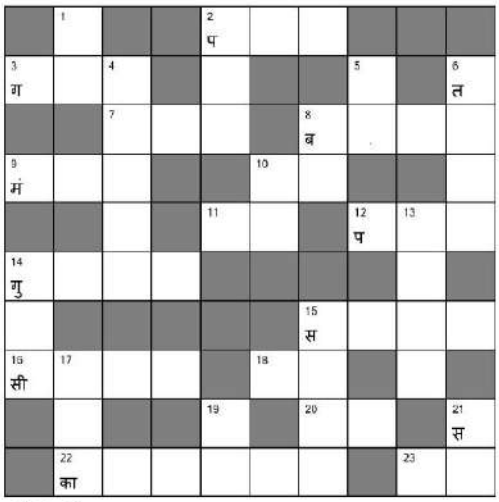

बाएँ से दाएँ - 2. मेहमान 3.गर्व/गौरव 7.तलुआ 8. मजदूर 9. मोर/मयूर 10. वाणी/बोली 11. साली (पत्नी की बहन) 12. एक मशरूम का नाम 14. गौरैया 15. शनिवार 16. सिलबट्टा 18. धुप 20. धीरज/धैर्य 22.कल-परसों 23. टिड्डा

ऊपर से नीचे - 1. गले का परंपरागत हार 2. कबूतर 4.पतंगा 5. प्रिय/पति/प्रेमी 6.मांस की सब्जी 8. मजदूरी/रोजी 10. लकड़ी का अहाता 13.कॉकरोच 14.हथौड़ी 15. समथन 17.छोटा बच्चा 19. आवाज देना/ बुलाना 21.साफ़